Delhi Postal Regd. No. DL (C) - 01/1272/2021-23 R.N.I. No. 72014/99 Posted at LPC Delhi RMS, Delhi-6 Monday & Tuesday

अखिल भारतीय तेरापंथ टाइम्स

संघीय समाचारों का साप्ताहिक मुखपत्र

अर्हत उवाच

सव्वत्थ विणीयमच्छरे।

किसी के प्रति मात्सर्यभाव मत रखो।

❀ ❀ ❀

इणमेव खणं वियाणिया।

उपलब्धि का क्षण यही है।

• नई दिल्ली • वर्ष 23 • अंक 23 • 14 - 20 मार्च, 2022 प्रत्येक सोमवार • प्रकाशन तिथि : 12-03-2022 • पेज : 12 • ₹ 10

महाश्रम के पर्याय बनें युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमण

तेरापंथ, भिक्षु और तेरापंथ का संविधान–इसे एक त्रिपदी के रूप में देखा जा सकता है।

जहाँ तेरापंथ धर्मसंघ का नाम आता है तुरंत ध्यान जाता है एक गुरु एक विधान, मर्यादा और अनुशासन पर। और इस धर्मसंघ में व्याप्त सेवा भावना मानस पटल पर आती है। तेरापंथ एक ऐसा धर्मसंघ है जहां गुरु और गुरु इंगित को ही सर्वोपरि माना जाता है जहां मर्यादा और अनुशासन को प्रमुखता दी जाती है और जहां सेवा के संस्कार जन्म घुट्टी में दिए जाते हैं। यहाँ संघ का हर सदस्य सेवा देने के लिए आतुर रहता है, उसके पीछे कारण है गुरु का आशीर्वाद और वात्सल्यपूर्ण नेतृत्व।

आचार्य प्रवर ने साध्वीप्रमुखा मनोनयन के ५० वर्षों की संपन्नता पर आयोजित अमृत महोत्सव कार्यक्रम में साध्वीप्रमुखा कनकप्रभाजी को 'शासनमाता' का अलंकरण प्रदान कर उन्हें सम्मानित किया था और आज का यह दिन देखकर ऐसा लग रहा था कि शासन के सरताज भी शासनमाता के प्रति नतमस्तक है। शासनमाता सहित पूरे संघ को चित्त-समाधि प्रदान करना ही आचार्य प्रवर का लक्ष्य है।

शासनमाता साध्वीप्रमुखाश्री कनकप्रभाजी के अस्वस्थता के समाचार मिलने के पश्चात आचार्य प्रवर द्वारा किया गया प्रलंब विहार इतिहास के पन्नों में अंकित हो गया। आने वाले वर्षों में जब कभी भी सेवा का प्रसंग आएगा, आचार्य महाश्रमण द्वारा किया गया महाश्रम स्मृति पटल पर उभर आएगा। आज न केवल तेरापंथ धर्मसंघ में बल्कि जैन जैनेतर समाज में भी इस महाश्रम की चर्चा हो रही है। गर्व होता है कि ऐसे धर्माचार्य पर जिन्हें साध्वीप्रमुखा के अस्वस्थता के समाचार मिलने के पश्चात् दिल्ली पहुंचना ही अपना एकमात्र लक्ष्य बना लिया। आचार्य प्रवर ने श्रावकों की कोमल भावनाओं को भी गौण नहीं किया। रतननगर, चुरु, टमकोर आदि पूर्व निर्धारित क्षेत्र जिन्हें दिल्ली जल्दी पहुंचने के लिए छोड़ना पड़ रहा था। जब श्रावकों की भावना को ध्यान में

रखते हुए आचार्य प्रवर ने इन क्षेत्रों को परसना स्वीकार किया और स्वयं ३० किलोमीटर से अधिक विहार को तैयार हो गए यानी गुरुदेव दूसरों के दुःख-दर्द को मिटाने के लिए स्वयं कष्ट झेलने के लिए सदा तत्पर रहते हैं। यह है आचार्य महाश्रमण की करुणा, गुरु का शिष्य के प्रति वात्सल्य भाव। झुंझुनू के बाद तो आचार्य प्रवर ने विहार के नव कीर्तिमान स्थापित कर दिया। प्रतिदिन सुबह-शाम विहार कर ३२, ३६, ३५ और ४७ किलोमीटर का अंतिम दिन का विहार तो मानो अचंभित करने वाला था। आचार्य प्रवर ने इस विहार के दौरान विश्राम करना तो दूर, आहार पानी को भी गौण कर दिया।

युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमणजी साध्वीप्रमुखा कनकप्रभाजी को अत्यधिक सम्मान देते हैं। उनके इस सम्मान को देखकर शासनमाता भी स्वयं को अभिभूत महसूस करती हैं कि कैसे धर्मसंघ के सरताज उन्हें वंदन करते हैं और उन पर कृपा करवाते हैं। प्रमुखाश्री जी के लिए आचार्य प्रवर के इस सम्मान के प्रति संपूर्ण धर्मसंघ नतमस्तक है। तेरापंथ धर्मसंघ के इतिहास में आचार्यों द्वारा ऐसे प्रलंब विहार का उदाहरण नहीं मिलता। आचार्य प्रवर ने राजस्थान के थली क्षेत्र के रेतीले टीलों से लेकर हरियाणा की सड़कों को तीव्र गति से नापते हुए शासनमाता को दर्शन प्रदान कर ही विराम लिया। फौलादी संकल्प के धनी आचार्यश्री महाश्रमण ने अहिंसा यात्रा के अंतिम पड़ाव दिल्ली पहुंचकर नव कीर्तिमान रच दिया। धर्मसंघ की आचार्य परंपरा में ५ दिन में १७७ किलोमीटर की यात्रा का प्रथम अवसर है और इस यात्रा का उद्देश्य था शासनमाता को दर्शन देना और चित्तसमाधि प्रदान करना। सचमुच में ऐसे आचार्य सौभाग्य से प्राप्त होते हैं। हम सौभाग्यशाली हैं कि हमें ऐसा तेजस्वी धर्मसंघ और महाप्रतापी संघपति मिले हैं।

अटूट संकल्प के धनी आचार्य प्रवर ने ६ तारीख को प्रातः विहार प्रारंभ किया, तब दिल्ली ४७ किलोमीटर दूर थी, हर किसी के मन में यही चिंता थी कि आज अस्पताल पहुंचना कैसे संभव होगा? परंतु चरैवेति-चरैवेति का सूत्र लिए चिंतामणि सरीखे महातपस्वी आचार्यप्रवर ने शाम ६ बजे से पूर्व दिल्ली के बालाजी हॉस्पिटल में प्रवेश कर ही लिया।

आचार्य प्रवर जैसे ही हॉस्पिटल पधारे, मानों संपूर्ण श्रावक समाज उनकी बाट निहार रहा था और पूरा वातावरण जय-जय ज्योति चरण के नारों से गुंजायमान हो गया।

आचार्य प्रवर जब शासनमाता के कक्ष में पहुंचे तो ऐसा लग रहा था कि एक पुत्र अपनी मां से मिलने आया है और शासनमाता के चेहरे पर अलग ही चमक दिखाई दे रही थी, हो भी क्यों नहीं आज तो उनकी मनोकामना पूर्ण हो गई है। आचार्य प्रवर ने शासन माता को वंदन कर स्वास्थ्य के बारे में जानकारी ली, कुशलक्षेम पूछा। यह अद्वितीय दृश्य सामने देखकर वहां उपस्थित सभी की आंखें सजल हो रही थी।

शासनमाता के कक्ष में पहुंचकर वंदन करते समय शायद उनके मनोभाव यही होंगे कि चिंता मत करो मां! अब मैं आ गया हूँ।

आचार्य प्रवर की इस यात्रा के बारे में साध्वीप्रमुखाजी ने जब जाना तो उन्होंने भी अपनी भावनाएं एक पत्र के माध्यम से निवेदन की जो इस प्रकार है–

१ दिन में तीन-तीन, चार-चार बार विहार करना इतिहास की दुर्लभ घटना है। लगातार १ सप्ताह तक इतने लंबे विहार कर आपने मेरे पर भारी कृपा की है और तेरापंथ धर्म संघ में नया इतिहास बनाया है। प्रभो! आपका यह महाश्रम मेरे लिए कल्याणकारी बने, मेरी आत्मा का उद्धार करने में परम उपकारी बने।

शेष-अशेष गुरु चरणों में समर्पण
आपकी शरण है
आपका आधार है

गुरुदेव के कालजयी पुरुषार्थ के प्रति मंगल कामना करती हूं कवि की इन पंक्तियों के साथ–

यह चरण नहीं रुक पाएंगे
पलके सागर झुक जाएंगे
युग के हिमगिरी गल जाएंगे
रवि शशि के रथ रुक जाएंगे
यह चरण नहीं रुक पाएंगे
यह चरण नहीं रुक पाएंगे।

यह कविता गुरुदेव के चट्टानी संकल्प का संकेत है। गुरुदेव का जीवन परम पुरुषार्थ की जीवंत कहानी है। आचार्य महाश्रमण बोलकर नहीं सबको जीकर श्रम की प्रेरणा देते हैं। हम भी गुरुदेव के पदचिह्नों का सहारा लें, श्रम के पथिक बन संघ की सेवा करते रहें, बस यही काम्य है।

४७ किमी का प्रलंब विहार कर शासनमाता कनकप्रभाजी को दर्शन दिराने की कराई कृपा

साधना के द्वारा आत्मा का कल्याण करने का प्रयास करें : आचार्यश्री महाश्रमण

दिल्ली, ६ मार्च, २०२२

महासंकल्प बली आचार्यश्री महाश्रमण जी ने आज सायं लगभग ६ बजे शासनमाता साध्वीप्रमुखाश्री कनकप्रभाजी को दर्शन दिराने की कृपा करवाई। आज का लगभग ४७ किमी का प्रलंब विहार तेरापंथ धर्मसंघ के आचार्यों में प्रथम बार हुआ। पूज्यप्रवर के संकल्प बल को शत-शत नमन्।

पूरे दिन विहार के बावजूद भी आचार्यप्रवर ने प्रवचन का क्रम जारी रखा और सायंकाल में मंगल प्रेरणा पाथेय प्रदान करते हुए फरमाया कि एक शब्द है, जो दो शब्दों से बना हुआ है–आत्मानुशासन। आत्मा और अनुशासन। यानी अपने आप पर अपना अनुशासन। इस बारे में धातव्य है कि आत्मा तो दिखाई नहीं देती, पर शरीर तो दिखाई देता है।

वाणी को भी हम जानते हैं, काम में लेते हैं। मन को भी जानते हैं। इंद्रियाँ भी हैं। अगर हम अपने शरीर पर अनुशासन कर लें, वाणी, मन व इंद्रियों पर अनुशासन कर लें तो इनका परिणाम आएगा आत्मानुशासन। आत्मा से ये सब जुड़े हुए हैं। शरीर से अशुभ-गलत प्रवृत्ति न करें। अशुभ काम योग से बचें। अपने अवयवों का अनुशासन करें, यह दो कछुओं के प्रसंग से समझाया कि शरीर पर अनुशासन होता है तो पाप रूपी कछुआ नहीं आ सकता है।

(शेष पृष्ठ २ पर)

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
14 - 20 मार्च, 2022

✦ *मन में दुर्विचारों का प्रवेश होने देना मन का असंयम और मन की अनपेक्षित चंचलता को कम करना मन का संयम होता है।*

—आचार्यश्री महाश्रमण

अपनी संतान को संपत्ति के साथ संस्कारों की संपदा भी दें : आचार्यश्री महाश्रमण

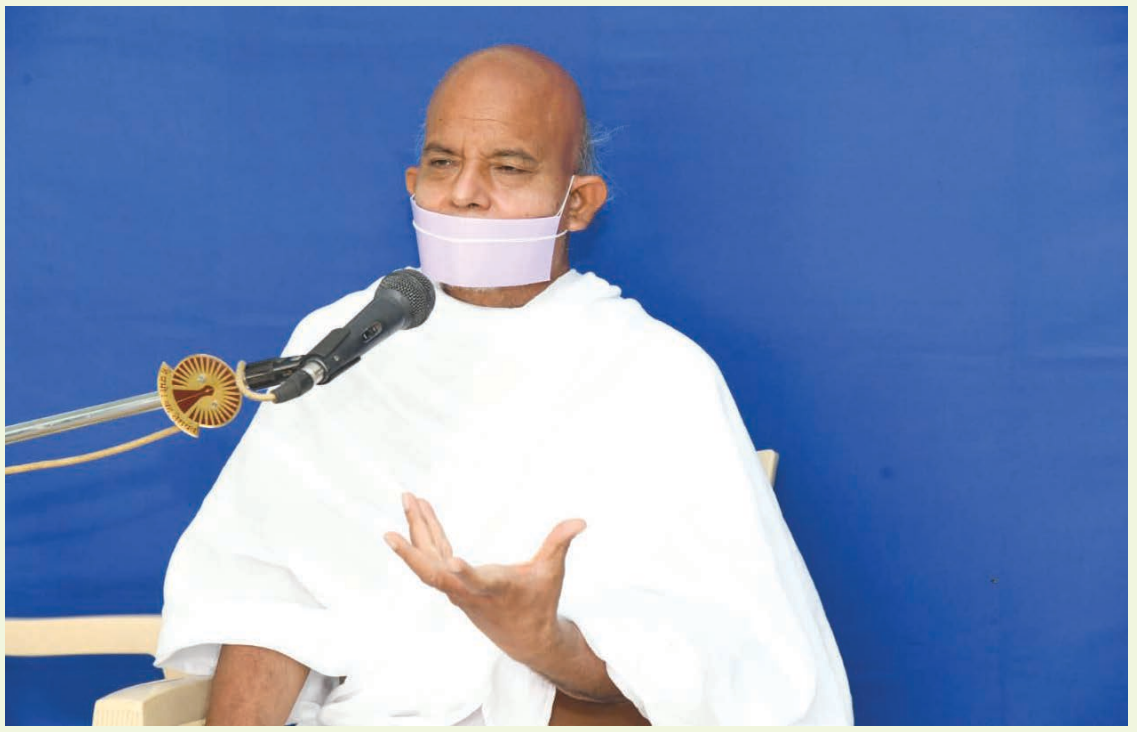

चांदगोठी, १ मार्च, २०२२

अटूट संकल्प के धनी महामहिम आचार्यश्री महाश्रमण जी १६ किलोमीटर का विहार कर चांदगोठी स्थित राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय पधारे।

मुख्य प्रवचन में आचार्यश्री महाश्रमण जी ने मंगल प्रेरणा प्रदान करते हुए फरमाया कि हमारे जीवन में दो तत्त्वों का योग है–एक है आत्मा और दूसरा तत्त्व है–शरीर। आत्मा और शरीर इनका समिश्रण होने से जीवन होता है।

आत्मा और शरीर इन दोनों में बड़ा अंतर है। आत्मा अपने आप में सचेतन है। जबकि शरीर अपने आप में अचेतन-निर्जीव होता है। आत्मा स्थायी तत्त्व है, शरीर अस्थायी है। शरीर का नाश हो जाता है, परंतु आत्मा शाश्वत है, शरीर अशाश्वत है। शरीर का छेदन-भेदन हो सकता है, पर आत्मा का नहीं। आत्मा में असंख्य परमाणु हैं, वे कभी अलग नहीं होते हैं।

मृत्यु के बाद आत्मा शरीर से अलग हो जाती है। शरीर पड़ा रहता है, आत्मा और कहीं चली जाती है। यह एक भेद विज्ञान का सिद्धांत है कि आत्मा और शरीर का अस्तित्व अलग-अलग है। यह अध्यात्म का सिद्धांत है कि आत्मा और शरीर एक नहीं, अलग-अलग हैं।

आदमी लोभ करता है, पर मेरा है, क्या? ये शरीर भी मेरा नहीं, यह भी छूटने वाला है। भौतिक पदार्थ साथ जाने वाला नहीं है। मेरे साथ क्या जाएगा, उस पर मैं ध्यान दूँ। कर्म साथ मे जाते हैं। जब आत्मा मोक्ष में जाती है, तो कर्म भी साथ नहीं रहते। संसारी आत्मा के पुण्य-पाप साथ में जाते हैं। संवर-निर्जरा का फल आत्म-शुद्धि रूपी धर्म साथ में जाता है। साथ जाने वाले ऊपर ध्यान दें।

कर्म का सिद्धांत है कि कर्म करने वाला ही कर्म को भोगता है। स्कूल के बच्चों को भी ये जानकारी दी जाए। उनके जीवन में आध्यात्मिकता, नैतिकता, सद्भावना और ईमानदारी का विकास हो। विद्या संस्थान ज्ञान के संस्थान हैं। यहाँ ज्ञान का आदान-प्रदान और अध्ययन होता है। दुनिया में ज्ञान बहुत पवित्र तत्त्व होता है।

अपनी संतानों को संपत्ति के साथ संस्कारों की संपदा भी दें, धर्म भी साथ में देने का प्रयास करें। धर्म जीवन में है, तो यह जीवन भी अच्छा होता है, और आगे के लिए भी हमारी आत्मा के हितावह स्थिति का निर्माण हो सकता है। जीवन-विज्ञान, प्रेक्षाध्यान सभी लोगों के लिए उपयोगी है। जैन बनें न बनें गुडमैन अवश्य बनें।

आस्तिक विचारधारा में आध्यात्मिकता को और नास्तिकता में भौतिकता को प्राधान्य प्राप्त हो जाता है। अध्यात्मवाद में शरीर अलग, आत्मा अलग है। आत्मा का कल्याण कैसे हो, आदमी वैसा प्रयास करे। अणुव्रत आध्यात्मिकता की ही शाखा-प्रशाखा है। अहिंसा यात्रा के तीन सूत्रों को समझाया एवं स्वीकार करवाए। स्कूल की ओर से प्रिंसिपल निशा चौधरी ने पूज्यप्रवर का स्वागत किया।

कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेश कुमार जी ने किया।

आत्मा का कल्याण करने का प्रयास...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

प्रेक्षाध्यान की साधना में शरीर की स्थिरता, शिथिलता का सुझाव दिया जाता है। जबान पर लगाम रखें, भाषा पर संयम रखें। अनपेक्षित न बोलें। कपट-झूठ से बचें तो वचनोनुशान सिद्ध हो सकता है। मन से न अशुभ चिंतन करें, न अनावश्यक सोचें। ध्यान में एकाग्रता के प्रयोग भी कराए जाते हैं। दीर्घ श्वास के प्रयोग से मन पर अनुशासन हो सकता है। पाँचों इंद्रियों का संयम रखना, दुरुपयोग न करना इंद्रियानुशासन हो जाता है। जो काम की बात हो उसे किया जा सकता है। आत्मानुशासन प्राप्त हो सकता है।

मनुष्य जन्म दुर्लभ भी है और महत्त्वपूर्ण भी है। इसका हम अच्छा लाभ उठाने का प्रयास करें। साधना करने का, आत्मा का कल्याण करने का प्रयास करें। मोक्ष की उत्कृष्ट साधना मनुष्य ही कर सकता है। गृहस्थ में रहते हुए धर्म-संयम को भी याद रखें। धंधों में से भी समय निकालें। व्यवहारों और आचरणों में संयम हो। सामायिक की साधना की जा सकती है। सुमंगल साधना को भी स्वीकार किया जा सकता है, वह तो उच्च कोटि की गृहस्थ जीवन की साधना है।

आचार्य भिक्षु से जुड़ा धर्मसंघ है। सभी अध्यात्म की दृष्टि से साधना करें। जैन-अजैन सभी अध्यात्म की दिशा में आगे बढ़ने का प्रयास करें। यह मानव जीवन प्राप्ति का एक फल हो सकता है। धन तो इस जीवन के लिए है, पर धर्म तो आगे भी काम आ सकेगा। धर्म को याद रखें। धन के अर्जन में भी धर्म हो। ज्ञान, दर्शन, चारित्र की आराधना सच्चा धर्म हो। उसका अर्जन होना चाहिए। आगे के लिए धर्म का टिफिन तैयार करें। आदमी को धर्म का संचय करते रहना चाहिए, ताकि आगे का रास्ता प्रशस्त बन सके।

इस बार अन्य तरीके से दिल्ली आए हैं। साध्वीप्रमुखाश्री जी से मिलना हो गया।

डालमचंद बैद के घर में भी रहने का मौका मिल गया। बैद परिवार में भी खूब धर्म की साधना चलती रहे।

पूज्यप्रवर की अभिवंदना में डालमचंद बैद ने अपनी भावना अभिव्यक्त की। कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेश कुमार जी ने किया।

महात्मा बनें या न बनें परंतु सदात्मा जरूर बनें: आचार्यश्री महाश्रमण

अचीनाताल, ४ मार्च, २०२२

सवा ग्यारह घंटे के दिन में साढ़े आठ घंटे विहार कर महान परिव्राजक आचार्यश्री महाश्रमण जी अचीनाताल पधारे। मुख्य प्रवचन में तेरापंथ धर्मसंघ के कल्पतरु आचार्यश्री महाश्रमण जी ने मंगल प्रेरणा प्रदान करते हुए फरमाया कि आदमी के जीवन में अनेक वृत्तियाँ होती हैं, उनमें एक वृत्ति है–सरलता-ऋजुता की। ऋजुता का विलोम शब्द माया है। माया यानी छल-कपट, ये करना भी एक वृत्ति है। ये दुर्वृत्ति है। सरलता सुवृत्ति है।

झूठ और कपट का संबंध, सरलता और सच्चाई का संबंध होता है। सरल व्यक्ति की शैद्धि-शुद्धि होती है। जिसके जीवन में धर्म होता है, वह निर्वाण को प्राप्त होता है। धर्म सरल-ऋजु व्यक्ति के जीवन में ठहरता है। जो महात्मा होता है, उनके मन में, वाणी में और कर्म में एकरूपता होती है। दुरात्मा लोगों के मन में, वाणी में और आचरण में भिन्नता होती है।

महात्मा बनना तो ऊँची बात है, हम सदात्मा के रूप में रहें। पापों से बचकर रहें, सदाचार के मार्ग पर चलें। संत में तो सरलता-शांति होनी ही चाहिए। संत वह होता है, जो शांत होता है।

संतों के भी नेतृत्व करने वाले संत हुए परम पूज्य कालूगणी। आज फाल्गुन शुक्ला द्वितीया है जो पूज्य कालूगणी के जन्म के साथ जुड़ा हुआ है। कालूगणी का जन्म वि०सं० १९३३ में हुआ था, ताल छापर में। वे बालावस्था में ही दीक्षित हो गए। पूज्य कालूगणी के जन्म के समय के प्रसंग समझाए। पूज्य कालूगणी के दो शिष्य हमारे धर्मसंघ के आचार्य बने। युगप्रधान आचार्य तुलसी और युगप्रधान आचार्यश्री महाप्रज्ञजी। दोनों आचार्यों का पूज्य कालूगणी के प्रति विनम्र-श्रद्धा का भाव था।

कालूगणी की भी मघवागणी के प्रति अच्छी श्रद्धा-विनम्रता के भाव थे। कालूगणी ने संस्कृत भाषा का भी हमारे धर्मसंघ में विकास किया था। मुनि नथमलजी-बागौर, मुनि बुद्धमल जी स्वामी अच्छे विद्वान तत्त्वज्ञ संत थे। मुनि गणेशमल जी-गंगाशहर, मुनि सोहनलाल जी-चाड़वास, मुनि पूनमचंदजी-डूंगरगढ़ जैसे संत पूज्य कालूगणी से दीक्षित संत थे। अनेक और भी साधु-साध्वियाँ उनके करकमलों से दीक्षित हुए हैं।

आज ही के दिन अणुव्रत आंदोलन का प्रारंभ, पारमार्थिक शिक्षण संस्था की स्थापना हुई थी। मैंने भी दीक्षा लेने का निर्णय करने से पहले परमपूज्य कालूगणी का जप किया था। वो दिन था भाद्रव शुक्ला छठ कालूगणी का महाप्रयाण दिवस था। मुझे तो धर्म का रास्ता मिल गया था। कालूगणी को पुण्यवान आचार्य के रूप में माना गया है। कालूगणी का निस्पृहता का भी उदाहरण है। पूज्य डालगणी ने उनका मनोनयन किया था।

आज हम उनके जन्म दिवस पर उनका स्मरण कर रहे हैं। उन्होंने संस्कृत भाषा को बढ़ावा दिया था। हमारे धर्मसंघ में कितने-कितने संस्कृतज्ञ चारित्रात्माएँ बन गए हैं। संस्कृत भाषा को जानने से आगमों का अध्ययन आसान हो सकता है। हमारे धर्मसंघ में ज्ञान, चारित्र, साधना का विकास होता रहे। पूज्य कालूगणी के जीवन से प्रेरणा लेते रहें।

कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेश कुमार जी ने किया।

✦ *यदि दुनिया में धोखा न हो तो दुनिया बहुत अच्छी बन सकती है। ईमानदारी के प्रति सघन आस्था हो तो अनेकानेक समस्याओं से छुटकारा मिल सकता है।*

– आचार्यश्री महाश्रमण

आदमी को निरहंकार रहने का प्रयास करना चाहिए : आचार्यश्री महाश्रमण

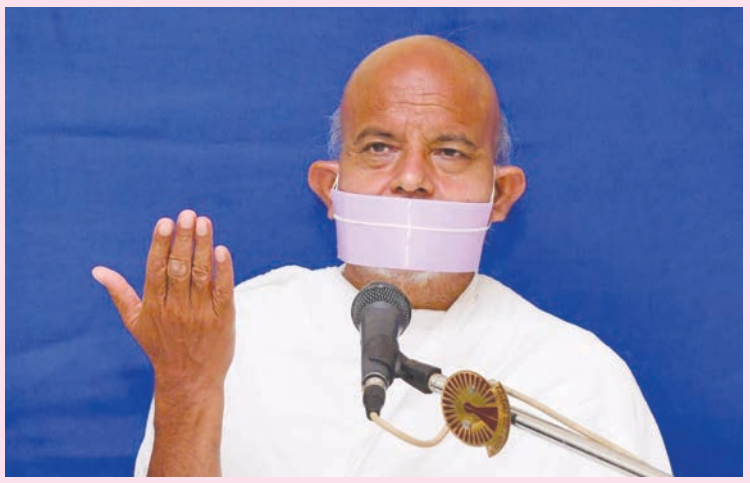

झज्जर (हरियाणा), ५ मार्च, २०२२

अहिंसा यात्रा प्रणेता आचार्यश्री महाश्रमण जी ने दिल्ली प्रवास के लिए संकल्प किया और अब लगभग दिल्ली के पास ही पहुँच रहे हैं। इतने बड़े-बड़े विहार को भी मामूली मान लेते हैं। पूज्यप्रवर की संकल्प शक्ति विराट और गजब की है। कहा गया है—चलते-चलते चलना भी आसान हो जाता है। करते-करते करना भी आसान हो जाता है। दुःखों का पहाड़ जब टूटता है आदमी पर, तो सहते-सहते सहना भी आसान हो जाता है। अखंड परिव्राजक आचार्यश्री महाश्रमण जी ३३ किलोमीटर का प्रलंब विहार कर झज्जर के राजकीय स्नातकोत्तर नेहरू महाविद्यालय पधारे।

परम पावन ने मंगल प्रेरणा प्रदान करते हुए फरमाया कि आदमी के भीतर अहंकार की वृत्ति भी होती है। हालाँकि सब मनुष्यों में अहंकार नहीं होता है, जो वीतराग बन चुके हैं, उनमें अहंकार नहीं होता। तात्त्विक भाषा में हमारे यहाँ चौदह गुणस्थान बताए गए हैं, वीतराग में अंतिम चार गुणस्थान होते हैं। वीतराग दो प्रकार के होते हैं, छद्मस्थ वीतराग और केवली वीतराग।

छद्मस्थ वीतराग भी दो प्रकार के होते हैं—उपशांत मोह वीतराग और क्षीण मोह वीतराग। ग्यारहवें गुणस्थान वाला उपशांत मोह छद्मस्थ वीतराग सराग बनता ही है। चारों कषाय भी उपशांत अवस्था से छूटकर आ जाते हैं। साधु में भी कुछ-कुछ अहंकार प्रगट रूप दिखाई दे सकता है। कारण साधु छद्मस्थ है, छठे गुणस्थान में है। सामान्य गृहस्थ में भी अहंकार हो सकता है। धन-संपदा, रूप, जाति, कुल, शक्ति, तप व सत्ता का घमंड हो सकता है।

अपूर्ण ज्ञान वाला व्यक्ति अहंकार कर सकता है, पूर्ण ज्ञानी नहीं। अहंकार की प्रवृत्ति को पराजित करने के लिए मार्दव-मृदुता की अनुप्रेक्षा करनी चाहिए। विनम्रता का अभ्यास करना चाहिए, पद, पैसा और प्रतिष्ठा हमेशा रहे भी, इसका क्या भरोसा है। ये अहंकार का कारण न बने। पद तो आज है, पता नहीं कल रहे या न रहे, यह एक प्रसंग से समझाया कि आदमी के गुणों की योग्यता का पद ऊँचा रहे। ज्ञान का भी घमंड न करें। ज्ञान का और विकास करें।

चेहरे की सुंदरता का भी ज्यादा महत्त्व नहीं होता है। आदमी की विद्वता, गुणवत्ता, सदाचार, साधना और चरित्र का ज्यादा महत्त्व है। हमारा व्यवहार, आचार, संस्कार प्रतिभा और ज्ञान का अधिक महत्त्व है, यह एक प्रसंग से समझाया कि कपड़ों का ज्यादा महत्त्व नहीं है, गुणों का अधिक महत्त्व है। आते समय कपड़ों का और जाते समय गुणों का सम्मान होता है।

अभिमान तो मदिरा-पान के समान है। हम गुणों से बड़े बनें। ज्ञान, सदाचार, चारित्र अच्छा रहे, घमंड न करके आदमी को निरहंकार रहने का प्रयास करना चाहिए। पद, पैसा, प्रतिष्ठा के घमंड में गृहस्थ न जाकर निरहंकारता में रहने का लक्ष्य रखें, यह काम्य है।

कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेश कुमार जी ने किया।

अणुव्रत काव्यधारा ने दिया अशांत विश्व को शांति का संदेश

मुंबई।

आचार्य तुलसी सभागार में अणुव्रत काव्यधारा के रूप में आयोजित राष्ट्रीय कवि सम्मेलन में श्रोताओं ने एक अहिंसक और शांतिप्रिय समाज के निर्माण का संकल्प व्यक्त किया। यह कार्यक्रम अणुविभा के नाम से लोकप्रिय अंतर्राष्ट्रीय संस्था अणुव्रत विश्व भारती के तत्त्वावधान में अणुव्रत समिति, मुंबई द्वारा आयोजित हुआ। उल्लेखनीय है कि अणुव्रत आंदोलन के ७४वें स्थापना दिवस के उपलक्ष्य में देशभर में ५० स्थानों पर काव्यधारा कवि सम्मेलनों का आयोजन किया गया।

साध्वी राकेश कुमारी जी ने अपने उद्बोधन में दुनिया में बढ़ रहे हिंसा और तनाव के माहौल में अणुव्रत दर्शन को सटीक समाधान बताया। उन्होंने कहा कि अणुव्रत सुधार की बात करता है। आचार्यश्री तुलसी ने कहा था—सुधरे व्यक्ति समाज व्यक्ति से राष्ट्र स्वयं सुधरेगा। समणी डॉ० मंजुलप्रज्ञा जी और समणी अमृतप्रज्ञा जी ने अपने विचार व्यक्त किए।

अणुविभा अध्यक्ष संचय जैन ने बताया कि देश की आजादी के बाद महान संत आचार्यश्री तुलसी ने भारत के नागरिकों से असली आजादी अपनाओ का आह्वान करते हुए व्यक्ति सुधार के लिए अणुव्रत की एक आचार संहिता प्रस्तुत की थी जिसे बिना किसी धर्म, जाति, रंग या वर्ण भेद के कोई भी व्यक्ति अपने जीवन में अपनाकर सुखपूर्वक जीवन जी सकता है। अणुव्रत अनुशास्ता आचार्य महाश्रमण जी के आध्यात्मिक मार्गदर्शन में आज यह आंदोलन संयुक्त राष्ट्रसंघ से संबद्ध संस्था अणुविभा के तत्त्वावधान में देशभर में फैली १८० अणुव्रत समितियों और हजारों कार्यकर्ताओं के माध्मय से संयम प्रधान अणुव्रत जीवनशैली के प्रसार में संलग्न है।

अणुव्रत गीत से शुभारंभ इस कार्यक्रम में अणुव्रत समिति की अध्यक्ष कंचन सोनी ने बताया कि देश के ख्यातिप्राप्त कवियों ने इस काव्य संध्या को अणुव्रत जीवनशैली को अपनाने के लिए अभिप्रेरित किया। दिल्ली से समागत लोकप्रिय कवयित्री डॉ० कीर्ति काले, जयपुर राजस्थान से वरिष्ठ कवि इकराम राजस्थानी, राजस्थान शाहपुरा के गीतकार और पैरोडिकार डॉ० कैलाश मंडेला, हास्य कवि और व्यंग्यकार गौरव शर्मा और मुन्ना बैटरी आदि कवियों ने अपनी प्रस्तुति दी।

कार्यक्रम में अणुविभा की राष्ट्रीय टीम में शामिल अध्यक्ष संचय जैन, वरिष्ठ उपाध्यक्ष अविनाश नाहर, उपाध्यक्ष राजेश सुराणा, महामंत्री भीखम सुराणा, न्यासी गणेश कच्छारा, सहमंत्री इंद्र बैंगानी, संगठन मंत्री विनोद कोठारी, संगठन मंत्री डॉ० कुसुम लुनिया, महाराष्ट्र राज्य प्रभारी रमेश धोका, डॉ० धनपत लुनिया, काव्यधारा कोर टीम सदस्य नीरज बंबोली, अणुव्रत समिति, मुंबई की अध्यक्षा कंचन सोनी, मंत्री वनिता बाफना, कोषाध्यक्ष ललिता डागलिया सहित अनेक सदस्य उपस्थित थे।

विधायक अतुल भातखलकर, नगरसेवक शिवकुमार झा, नगरसेवक संदीप माने, भाजपा मुंबई उपाध्यक्ष विनोद शेलार, नगरसेविका दक्षा पटेल, कुशल गड़िया की उपस्थिति रही। मुबई सभा-संस्थाओं से मदन तातेड़, नरेंद्र तातेड़, के०एल० परमार, बाबूलाल राठौड़, सुरेंद्र कोठारी, नवरतन गन्ना, राकेश सियाल, अशोक तातेड़, रमेश सुतरिया, विजय पटवारी, मनोहर गोखरू, विनोद बोहरा, गणपत डागलिया, कुमुद कच्छारा, तरुणा बोहरा, रचना हिरण, प्रेमलता सिसोदिया, प्रकाश देवी तातेड़, तेजप्रकाश डांगी, संदीप कोठारी, महेश बाफना, सुमन चपलोत, रमेश चौधरी, बलवंत चोरड़िया, दीपक डागलिया, नरेश सोनी, नरेश चपलोत, गौतम डागा, चेतन कोठारी, राजेंद्र मुणोत, नितेश धाकड़, कांता तातेड़ सहित समाज के अनेक गणमान्य व्यक्तियों की उपस्थिति रही।

कार्यक्रम का संचालन डॉ० कुसुम लुनिया ने और आभार ज्ञापन अणुव्रत समिति, मुंबई मंत्री वनिता बाफना ने किया। सभी कवियों का अणुव्रत पट्टका व प्रतीक चिह्न से सम्मान किया गया। अणुव्रत सेल्फी पॉइंट भी अतिथियों के लिए आकर्षण का केंद्र रहा। इस प्रकार ७४वें अणुव्रत स्थापना दिवस पर अणुव्रत काव्यधारा के सफल आयोजन अणुव्रत आंदोलन के स्वर्णिम इतिहास का सृजन हुआ।

मिशन उत्थान का आगाज

चेम्बूर, मुंबई।

बहुश्रुत परिषद के संयोजक प्रो० मुनि महेंद्र कुमार जी, सहवर्ती संत अजित कुमार जी, मुनि जम्बूकुमार जी, डॉ० मुनि अभिजीत कुमार जी, मुनि जागृतकुमार जी, मुनि सिद्धकुमार जी के सान्निध्य में मिशन उत्थान का आगाज तेरापंथ भवन, चेम्बूर मुनिश्री के नमस्कार महामंत्र के मंत्रोच्चार से हुआ। चेम्बूर तेरापंथी सभा अध्यक्ष मूलचंद लोढ़ा ने संपूर्ण तेरापंथ समाज की ओर से स्वागत-अभिनंदन किया। तेयुप अध्यक्ष मुकेश मांडोत ने मुनिश्री के प्रति कृतज्ञता के भाव अर्पण किए। उत्थान के संयोजक रतन सियाल ने मिशन उत्थान पर प्रकाश डाला।

मुनि जाग्रत कुमार जी ने कहा कि आज विशिष्ट कार्यक्रम का शुभारंभ हो रहा है। तेरापंथ सभा, मुंबई के अध्यक्ष नरेंद्र तातेड़ ने समस्त श्रावक समाज को आह्वान करते हुए कहा कि जब २०२३ में गुरुदेव पधारें हम आध्यात्मिक भेंट दें, इस विजन को ध्यान में रखते हुए संपूर्ण मुंबई का श्रावक अध्यात्ममय बनें, प्रकाशमय बने।

अभातेयुप सहमंत्री भूपेश कोठारी ने कहा कि दो महीने के अथक श्रम से ही आज का यह रूप देखने को मिला है स्वयं का हो उत्थान ये विजन लेकर मुनिश्री हमें जागृत कर रहे हैं। तेरापंथ महिला मंडल, मुंबई की मंत्री अलका मेहता ने कहा कि हम सब सौभाग्यशाली हैं कि हमें तेरापंथ धर्मसंघ मिला और हमारे भगवन मुंबई धरा पर पधार रहे हैं।

डॉ० मुनि अभिजीत जी ने कहा कि भगवान महावीर ने जैन धर्म को मुक्ति के लिए बताया है उसी पर हम चलकर उत्थान करें। वाणी व्यवहार की ओर से उत्थान के लिए मुनि जम्बू कुमार जी ने कहा कि आज परिवार के मुखिया का नैतिक दायित्व है कि अपने परिवार को सुसंस्कारों के सिंचन के लिए उत्थान करें, जीवन में हर व्यक्ति का लक्ष्य यही बनें। अणुव्रत समिति के अध्यक्ष कंचन सोनी ने कहा कि अणुव्रत को साथ लेकर उत्थान की ज्योति हर घर में प्रज्वलित हो उत्थान टीम का परिचय एवं उत्थान थीम सॉन्ग की प्रस्तुतिकरण किया।

उत्थान टीम में संयोजक रतन सियाल, क्रिएटिव हेड तरुणा बोहरा, नेटवर्किंग हेड भूपेश कोठारी, अमित रांका, कंटेंट टीम से सुधांशु चंडालिया, संगीता चपलोत, यश भंसाली सहित अनेक सदस्यगणों का श्रम रहा। नव भारत टाइम्स के रिपोर्टर अनुराग त्रिपाठी ने विचार व्यक्त किए। कार्यक्रम का संचालन अभातेमम कार्यसमिति सदस्य तरुणा बोहरा ने किया।

कार्यक्रम में अभातेमम राष्ट्रीय ट्रस्टीगण, तेरापंथी सभा-मुंबई, तेयुप तेमम, टीपीएफ, अणुव्रत समिति व सभी गणमान्य पदाधिकारीगण की उपस्थिति में कार्यक्रम सफलता के सोपान पर पहुँचा।

अणुव्रत नशा मुक्ति अभियान

बारडोली।

मुनि आलोक कुमार जी स्वामी बारडोली स्थित अणुव्रत नशा मुक्ति केंद्र पधारे। वहाँ अवलोकन करते हुए मुनिवृंद ने कहा कि नशा नाश का द्वार है, नशे से आदमी ही नहीं अपितु पूरा घर-परिवार नष्ट हो जाता है, आदमी नशे में अपना सब कुछ खो देता है, नशे से परिवार ही नहीं पूरा देश बर्बाद हो जाता है। मुनिश्री ने कहा कि आप बहुत ही अच्छा कार्य कर रहे हो।

अणुव्रत समिति की अध्यक्षा ने कहा कि हर रविवार को केंद्र से नशा नहीं करने का संकल्प अलग-अलग जगह जाकर कैंप लगाते हैं व सभी को दवाई निःशुल्क वितरण करते हैं, नशामुक्ति केंद्र के संयोजक मनोज कच्छारा, समिति सदस्य स्नेहा मेहता, राजेश चोरड़िया, नीतू रांका उपस्थित रहे।

मंगलभावना समारोह का आयोजन

जीन्द।

तेरापंथ सभा भवन में मुनि जम्बू कुमार जी के सान्निध्य में मंगलभावना समारोह का कार्यक्रम आयोजित किया गया। मुनि जम्बू कुमार जी ने कहा कि जीन्द का श्रावक समाज संघ व संघपति के प्रति पूर्ण निष्ठावान है। यहाँ के भाई-बहनों में तत्त्वज्ञान में भी अच्छी रुचि है। मुनि धवल कुमार जी ने ज्यादा से ज्यादा धर्म-ध्यान करने की प्रेरणा दी।

तेरापंथ सभा अध्यक्ष खजांची लाल जैन, महिला मंडल अध्यक्षा उपासिका कांता मित्तल, टीपीएफ के अध्यक्ष डॉ० अनिल जैन, तेयुप मंत्री कुणाल मित्तल, नरेश जैन, श्रीचंद जैन, मास्टर राजकिशन जैन ने भी अपने विचार व्यक्त किए। मंच का संचालन तेयुप संरक्षक राजेश जैन ने किया।

✦ *व्यक्ति आकृति से नहीं, प्रकृति से अधम अथवा महान् बनता है।*

– आचार्यश्री महाश्रमण

महिला मंडल के विविध आयोजन

सात्त्विक भोजन से आध्यात्मिक लाभ

जसोल।

अभातेममं के निर्देशन में तेममं द्वारा रूपांतरण शिल्पशाला के अंतर्गत आहार पर कार्यशाला का आयोजन हुआ। सामुहिक नमस्कार महामंत्र से संगोष्ठी का शुभारंभ किया। प्रेरणा गीत से मंगलाचरण। उपाध्यक्ष नीतू सालेचा ने मुख्य अतिथि का स्वागत किया। उपासिका मोहनीदेवी संकलेचा ने मुहावरे को कहानी के माध्यम से समझाया। मुख्य वक्ता वरिष्ठ श्रावक शंकरलाल ढेलड़िया ने आहार के बारे में जानकारी देते हुए कहा कि आहार ही जीवन है। आहार के बिना कोई भी जीव जीवित नहीं रह सकता। मनुष्य को कैसा, कब, कितना आहार लेना चाहिए इसके बारे में जानकारी देते हुए कहा कि मनुष्य को हित, मित और ऋतु के अनुसार आहार ग्रहण करना चाहिए।

इस कार्यशाला में अ०भी०रा०शि० को जैसे महातपस्वी की तपस्या, संलेखना, संथारे के बारे में बताया। महिला मंडल मंत्री ममता मेहता ने सभी का आभार ज्ञापन किया। बहनों की अच्छी उपस्थिति रही।

'अहार' विषयक कार्यशाला का आयोजन

पर्वत पाटिया।

अभातेममं के द्वारा निर्देशित मासिक कार्यशाला के अंतर्गत रूपांतरण थ्रू जैनिज्म आहार विषय पर कार्यशाला का आयोजन महिला मंडल द्वारा तेरापंथ भवन में किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ नमस्कार महामंत्र के द्वारा वरिष्ठ प्रेक्षा प्रशिक्षक मनोज सुराणा द्वारा किया गया। बहनों ने प्रेरणा गीत से मंगलाचरण किया। कार्यक्रम के मुख्य वक्ता डाइटिशियन डॉक्टर रूपाली निलाखे, वरिष्ठ प्रेक्षा प्रशिक्षक मनो सुराणा व उपासिका अंजना पोरवाल आदि सभी का अध्यक्ष ललिता पारख ने स्वागत किया। रूपाली निलाखे का परिचय मनोज सुराणा ने दिया।

मुख्य वक्ता रूपाली निलाखे ने आहार की आवश्यकता व कब कितना और कैसे कितनी मात्रा में लेना चाहिए इस पर जानकारी दी। उपासिका अंजना ने हित, मित, भोजन करने की प्रेरणा दी। वरिष्ठ प्रशिक्षक मनोज ने बताया कि तामसिक भोजन नहीं करना चाहिए। भोजन सात्त्विक हो रुचिकर हो। सभी अतिथियों का डायरी एवं पेन से सम्मान किया गया। कार्यक्रम का संचालन पूर्व अध्यक्ष मनोज देवी गंग ने किया। मीना चिंडालिया ने आभार व्यक्त किया।

संतुलित आहार से बनाएँ जीवन को सुंदर

हासन (कर्नाटक)।

अभातेममं के निर्देशानुसार हासन महिला मंडल में रूपांतरण शिल्पशाला आहार कार्यशाला का आयोजन किया गया। जिसका शुभारंभ महिला मंडल की बहनों ने मंगलाचरण से किया। अध्यक्षीय भाषण में संगीता कोठारी ने कहा कि बहुत प्राचीन समय से जैन धर्म विज्ञान से जुड़ा है, उन्होंने बहनों को बताया कि कैसे सात्त्विक और संतुलित आहार लेने से अपना और परिवार का स्वास्थ्य स्वस्थ रह सकता है।

मंत्री विनीता सुराणा ने आगामी कार्यक्रम की जानकारी दी। सपना सुराणा ने बताया कि आहार शरीर का समाधान और समस्या है। नम्रता सुराणा ने अपने उद्‌गार व्यक्त किए। अंत में संतोष भंसाली ने आभार ज्ञापन किया। कार्यक्रम का संचालन दीपिका गादिया ने किया। सभी बहनों को शासन माता साध्वीप्रमुखाश्री जी के स्वास्थ्य लाभ हेतु जाप की प्रेरणा भी दी। सभी महिला मंडल की उपस्थिति सराहनीय थी।

रूपांतरण थ्रू जैनिज्म शिल्पशाला का आयोजन

बालोतरा।

अभातेममं के निर्देशानुसार तेममं की अध्यक्षा निर्मला संकलेचा की अध्यक्षता में बालोतरा की न्यू तेरापंथ भवन में अष्टमी की गोष्ठी में रूपांतरण थ्रू जैनिज्म शिल्पशाला का आयोजन किया गया। जिसका विषय था—आहार और स्टेशन था स्वास्थ्य। मंत्री संगीता बोथरा ने बताया कि सर्वप्रथम नमस्कार महामंत्र एवं प्रेरणा गीत का संगान किया गया। महिला मंडल अध्यक्षा ने भावना चौका की जानकारी सभी बहनों को प्रदान की। कोषाध्यक्ष उर्मिला सालेचा और कन्या मंडल प्रभारी श्वेता सालेचा ने कहा कि भोजन मिताहार एवं हिताहार होना चाहिए।

कार्यशाला में परामर्शक पीपी देवी ओस्तवाल, नारायणी देवी छाजेड़, लूणी देवी गोलेच्छा, उपाध्यक्ष चंद्रा बालड़, रानी बाफना, सहमंत्री इंदु भंसाली, रेखा बालड़, निवर्तमान अध्यक्ष अयोध्या देवी ओस्तवाल, अभातेममं सदस्य सारिका बागरेचा, पूर्व परामर्शक कमला देवी ओस्तवाल, देवी बाई छाजेड़, अध्यक्ष सहित लगभग १०० बहनें उपस्थित थी।

शासन माता साध्वीप्रमुखाश्री कनकप्रभा जी के स्वास्थ्य लाभ के लिए आचार्यश्री महाश्रमण जी द्वारा प्रदत्त मंत्र का सामूहिक जाप भी किया गया। गीतिका का संगान किया गया तथा जैन धर्म से संबंधित प्रश्नोत्तरी भी चलाई गई। कार्यक्रम का संचालन एवं आभार ज्ञापन मंत्री संगीता बोथरा ने किया।

कार्यशाला का आयोजन

राजाजीनगर।

अभातेममं के निर्देशानुसार एवं राजाजीनगर महिला मंडल के तत्त्वावधान में कन्या मंडल द्वारा R.E.A.L. कार्यशाला का आयोजन किया गया।

R - Relationship, E - Encouragement, A - Accountability, L - Laughter । कार्यशाला की शुरुआत कन्या मंडल द्वारा भिक्षु अष्टकम से की गई। महिला मंडल की अध्यक्षा चेतना वेद मूथा ने सभी का स्वागत किया। कन्या मंडल से शगुन वेद मूथा ने मुख्य वक्ता भावना कोठारी का परिचय दिया। भावना कोठारी ने REAL को समझाया। रिश्तों में वार्तालाप एक-दूसरे को जोड़े रखते हैं। कार्यशाला में १० कन्याओं ने भाग लिया।

कार्यक्रम का संचालन श्रेया बरलोटा ने किया। कार्यक्रम में महिला मंडल की बहनों की उपस्थिति भी रही। आभार ज्ञापन कन्या मंडल प्रभारी सरिता संचेती ने किया।

रूपांतरण थ्रू जैनिज्म कार्यशाला का आयोजन

राजाजीनगर।

अभातेममं के निर्देशानुसार तेममं द्वारा 'आहार' विषय पर कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यक्रम की शुरुआत नमस्कार महामंत्र के द्वारा की गई। बबिता मेहता ने पुरानी ढाल द्वारा मंगलाचरण किया। मंडल की अध्यक्षा चेतना वेद मूथा ने अपने अध्यक्षीय वक्तव्य में सभी का स्वागत किया।

मुख्य वक्ता प्रेक्षाध्यान प्रशिक्षिका रेणु कोठारी ने खाना और खाने का समय का वैज्ञानिक दृष्टिकोण से जोड़कर तथ्य प्रस्तुत किए। कार्यक्रम का संचालन मंत्री सीमा श्रीश्रीमाल के द्वारा किया गया। सहमंत्री लता नवलखा ने आभार ज्ञापित किया।

रियल तथा दादी-पोती कार्यशाला

अमराईवाड़ी।

अभातेममं के निर्देशन में महिला मंडल के अंतर्गत तेरापंथ कन्या मंडल द्वारा तेरापंथ भवन में दो चरणों में दो कार्यशालाओं का आयोजन किया गया। प्रथम चरण में REAL कार्यशाला का आयोजन हुआ। कार्यशाला की शुरुआत नमस्कार महामंत्र से की गई और कन्या मंडल द्वारा गीत के माध्यम से मंगलाचरण किया गया। अमराईवाड़ी महिला मंडल अध्यक्षा संगीता सिंघवी ने स्वागत वक्तव्य किया गया। मुख्य वक्ता उपासिका मंजु गेलड़ा ने REAL को समझाते हुए चार बिंदुओं पर प्रकाश डाला।

द्वितीय चरण में दादी-पोती कार्यशाला हुई। इस कार्यशाला में written task किया गया। जिसमें दादी अपनी पोती के लिए और पोती अपनी दादी के लिए पाँच-पाँच पॉइंट्स लिखेंगे और एक-दूसरे को पोस्ट करेंगे।

प्रियांशी हिरण, सलोनी हिरण व उनकी दादीजी सुशीला हिरण द्वारा सुंदर नाट्य प्रस्तुति की गई। दादी-पोती Fun task भी रखा गया, जिसमें गीत पर दादी पोती ने लिटिल मूव एवं एक्शन किए।

कार्यशाला का संचालन कन्या मंडल प्रभारी रीतिका गेलड़ा ने तथा आभार ज्ञापन महिला मंडल मंत्री लक्ष्मी सिसोदिया ने किया।

रूपांतरण थ्रू जैनिज्म शिल्पशाला

अमराईवाड़ी।

अभातेममं के निर्देशन में तेममं द्वारा रूपांतरण थ्रू जैनिज्म शिल्पशाला विषय आहार का आयोजन तेरापंथ भवन में किया गया। कार्यक्रम की शुरुआत उपासिका मंजु गेलड़ा ने नमस्कार महामंत्र से की। महिला मंडल की बहनों द्वारा मंगलाचरण किया गया। अध्यक्ष संगीता सिंघवी ने सभी का स्वागत किया। माता कच्छारा एवं शशि ओस्तवाल ने विषय पर अपने विचार व्यक्त किए।

मुख्य वक्ता उपासिका मंजु देवी गेलड़ा ने केंद्र के द्वारा निर्देशित सभी बहनों को अच्छी तरह से समझाया और त्याग-प्रत्याख्यान के प्रति जागरूक रहने की प्रेरणा दी। कार्यशाला का संचालन मंत्री लक्ष्मी सिसोदिया ने किया एवं आभार ज्ञापन उपाध्यक्ष शशि ओस्तवाल ने किया।

कार्यशाला का आयोजन

राजराजेश्वरी नगर।

अभातेममं द्वारा १८ पापों पर आधारित प्रयोगशाला को और पुष्ट करते हुए लता बाफना की अध्यक्षता में आर०आर० नगर महिला मंडल द्वारा कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यशाला का शुभारंभ नवकार मंत्र के द्वारा किया गया। १८ पाप में प्रथम पाप—प्राणातिपाप को विस्तृत रूप से प्रवक्ता उपासिका बहन कंचन छाजेड़ ने सरल भाषा में सभी को समझाया एवं बहनों की जिज्ञासाओं का समाधान किया। आभार मंत्री सीमा छाजेड़ ने किया।

अभातेयुप योगक्षेम योजना

योगक्षेम

✳ अभातेयुप प्रबंध मंडल सत्र - 2019-2021	51,00,000
✳ श्री अशोक श्रेयांस बरमेचा, तारानगर-हैदराबाद	11,00,000
✳ श्री बच्छावत परिवार, सरदारशहर-जयपुर	5,00,000
✳ श्री बसंत अर्पित नाहर, महेंद्रगढ़-उधना	5,00,000
✳ श्री राकेश कठोतिया, लाडनूं-मुंबई	5,00,000
✳ श्री रूपचंद कोडामल जैनसुख दुगड़, बीदासर-मुंबई	5,00,000
✳ श्री शंकरलाल विमल विनीत पितलिया, भीलवाड़ा	5,00,000
✳ श्री शांतिलाल पारसमल दक उमरी, उधना-सूरत	5,00,000
✳ श्री सुमतिचंद गोठी, सरदारशहर-मुंबई	5,00,000
✳ श्री विपिन जैन पारख, सिरसा-मुंबई	5,00,000
✳ श्री राजकुमार गौतम प्रसाद जैन, बेलपाड़ा-उड़ीसा	5,00,000
✳ श्री सागरमल दीपक विमल कमलेश श्रीमाल, देवगढ़-बड़ौदा	5,00,000
✳ श्री जैनसुख दीपक बोथरा, छापर-सिलीगुड़ी	5,00,000

✦ *जीवन में जितना प्रमाद होता है, व्यक्ति उतना ही असफल होता है और जितना अप्रमाद होता है, व्यक्ति उतना ही सफल बनता है।*
– आचार्यश्री महाश्रमण

विश्वशांति के लिए अणुव्रत का शंखनाद जरूरी

मुंबई, महाराष्ट्र।

७४वें अणुव्रत स्थापना दिवस के अवसर पर राज्यपाल भवन में महामहिम राजयपाल भगत सिंह कोश्यारी की गरिमामयी उपस्थिति में मुनि अभिजीत कुमार जी एवं मुनि जागृत कुमार जी के सान्निध्य में अणुव्रत विश्व भारती के तत्त्वावधान में अणुव्रत समिति, मुंबई की पहल पर अणुव्रत का शंखनाद-कार्यक्रम का आयोजन हुआ। मंगलाचरण मुनिश्री द्वारा 'बदले युग की धारा अणुव्रतों के द्वारा' गीत के संगान से हुआ। अणुव्रत गीत की प्रस्तुति अंजू कोठारी, मुकेश मादरेचा, प्रियंका सिंघवी ने दी। अणुव्रत समिति अध्यक्षा कंचन सोनी ने सभी का स्वागत किया।

राजयपाल माननीय भगत सिंह कोश्यारी ने कहा कि अणुव्रत शांति का शंखनाद है। आचार्य तुलसी ने द्वितीय विश्व युद्ध की हिंसा से त्रस्त समग्र जनता के लिए अहिंसात्मक अणुव्रत आंदोलन किया। आज आचार्यश्री महाश्रमण जी अहिंसा यात्रा के द्वारा शांति का संदेश दे रहे हैं।

इस अवसर पर डॉ० मुनि अभिजीत कुमार जी ने प्रेरक उद्‌बोधन दिया एवं मुनि जागृत कुमार जी ने प्रेक्षाध्यान के प्रयोग करवाए। अणुविभा अध्यक्ष संचय जैन ने अणुव्रत प्रसार द्वारा अणुविभा के लोकहितकारी कार्यों की जानकारी परिषद में रखी।

कार्यक्रम का संचालन राजकुमार चपलोत ने किया व मंत्री वनिता बाफना ने आभार ज्ञापन किया। अणुविभा से महामंत्री भीखम सुराणा, उपाध्यक्ष अविनाश नाहर, राजेश सुराणा, न्यासी गणेशलाल कच्छारा, सहमंत्री इंद्र बैंगानी, संगठन मंत्री विनोद कोठारी, संगठन मंत्री व काव्यधारा राष्ट्रीय संयोजिका डॉ० कुसुम लुनिया, महाराष्ट्र प्रभारी रमेश धोका, अणुविभा सदस्य डॉ० धनपत लुनिया की विशेष उपस्थिति रही।

अभातेममं निवर्तमान महामंत्री तरुणा बोहरा, मुंबई के वरिष्ठ पदाधिकारी सुरेंद्र कोठारी, रमेश सोनी, रविंद्र सिंघवी, चेम्बूर सभा अध्यक्ष मूलचंद लोढ़ा की उपस्थिति रही।

अणुव्रत समिति, मुंबई के भूतपूर्व अध्यक्ष गणपत डागलिया, उपाध्यक्ष रोशन मेहता, कोषाध्यक्ष लतिका डागलिया, संगठन मंत्री मनोहर कच्छारा का कार्यक्रम को सफल बनाने में विशेष श्रम रहा।

ज्ञानशाला के विविध आयोजन

संस्कार निर्माण शिविर का आयोजन

सिंधनूर।

साध्वी डॉ० गवेषणाश्री जी के सान्निध्य में ज्ञानशाला द्वारा संस्कार निर्माण शिविर का आयोजन किय गया। कार्यक्रम का शुभारंभ साध्वीश्री जी द्वारा नवकार महामंत्र से हुआ। ज्ञानशाला के बच्चों ने मंगलाचरण किया। ज्ञानशाला संयोजिका राजकंवर बोहरा ने सबका स्वागत किया। अमृत क्या है और जहर क्या है? स्वतंत्रता अमृत और स्वच्छंदता जहर है। जन्म से संस्कारी की पहली पाठशाला है—माता-पिता और दूसरी पाठशाला है—ज्ञानशाला। साध्वी मयंकप्रभा जी ने अपने भाव व्यक्त किए। साध्वी मेरुप्रभा जी ने सुंदर गीतिका की प्रस्तुति की। अमृत महोत्सव के उपलक्ष्य में ज्ञानशाला के विद्यार्थियों के द्वारा साध्वीप्रमुखाश्री जी के जीवन की कुछ झलकियाँ बताई गई।

कीर्ति नगर एवं ज्ञानशाला के विद्यार्थियों ने गीतिका का संगान किया। ज्ञानशाला की प्रशिक्षिका द्वारा गीतिका की प्रस्तुति दी गई। मुख्य प्रशिक्षिका पिंकी नाहर ने कार्यक्रम का संचालन किया। सभा मंत्री राजेंद्र छल्लानी ने आए हुए सभी आगंतुकों का स्वागत-अभिनंदन किया। कार्यक्रम में सकल समाज के बच्चे एवं श्रावक-श्राविकाएँ उपस्थित थे। लगभग ४० से अधिक बच्चों ने इस शिविर में भाग लिया। मंड्या क्षेत्र से भी श्रावकगण दर्शनाथ पधारे। कार्यक्रम का संचालन पिंकी नाहर ने किया।

बच्चों में संस्कारों के सिंचन का सरल माध्यम - ज्ञानशाला

भीलवाड़ा।

आचार्य श्री तुलसी द्वारा बच्चों में संस्कारों के निर्माण निमित्त दिया गया एक अवदान है—ज्ञानशाला। ज्ञानशाला में बच्चों को संस्कारों के साथ-साथ धर्मध्यान एवं उच्च आचरण के साथ कैसे जीवन जिएँ सिखाया जाता है। भीलवाड़ा आर०सी० व्यास कॉलोनी स्थित जयाचार्य भवन में विराजित तेरापंथ धर्मसंघ के सबसे वयोवृद्ध संत शासनश्री मुनि हर्षलाल जी स्वामी एवं मुनि आनंद कुमार जी स्वामी द्वारा बच्चों में संस्कारों के सिंचन हेतु ज्ञानशाला प्रशिक्षिकाओं एवं ज्ञानशाला के बच्चों में उपयुक्त शिक्षा दी जाती रही है।

इसी क्रम में लुहारिया निवासी शंकरलाल दुगड़, कंचन देवी दुगड़ के पौत्र एवं चलथान प्रवासी ज्ञान दुगड़, वर्षा दुगड़ के पुत्र वंदन दुगड़ ने मुनिश्री के समक्ष प्रतिक्रमण, लोगस्स पाठ की प्रस्तुति दी। सुरेंद्र मेहता एवं बसंता देवी मेहता की विशेष उपस्थिति रही। वर्षा दुगड़ ने कहा कि वंदन अभी भक्तांमर पाठ सिखा रहा है। मुनि आनंद कुमार जी ने वंदन एवं उनके माता-पिता को प्रेरणा पाथेय प्रदान करते हुए कहा कि ज्ञानशाला ही एक ऐसा माध्यम है जिससे बच्चों में संस्कार के साथ-साथ धर्म के प्रति जागरूकता बढ़ती है।

'सब रोगमुक्त बनें, सब सुखी बनें' कार्यशाला का आयोजन

पुर।

'सब रोगमुक्त बनें, सब सुखी बनें' कार्यशाला का प्रारंभ मुनि रवींद्र कुमार जी के नमस्कार महामंत्र से हुआ। मुनि रवींद्र कुमार जी ने कहा कि फास्ट फूड आदतवश अधिक खाने से पाचन तंत्र खराब होता है, हमें मात्रा का ध्यान रखना चाहिए। आहार के विवेक से लंबी आयु पाई जा सकती है। मुनि अतुल कुमार जी ने कहा कि एक बार जब आपका मन पूर्ण रूप से स्थिर हो जाता है तब आपकी बुद्धि मानवीय सीमाओं को पार कर जाती है। मुनिश्री ने प्राणायाम की महत्ता बताते हुए प्राणायाम के प्रयोग करवाए। उन्होंने कहा कि नियमित प्राणायाम करने से पुरुषों में प्रोस्टेट और महिलाओं में बच्चेदानी की समस्या से मुक्ति मिलती है साथ ही फेंफड़ों की क्षमता बढ़ने से अधिक ऑक्सीजन मस्तिष्क में जाती है, जिससे मस्तिष्क कभी बीमार नहीं होता।

मुनिश्री ने कहा कि चिंता और तनाव में किया गया भोजन बीमारियों को निमंत्रण देता है, भोजन बनाते और खाते समय मन को शांत रखना चाहिए। कार्यक्रम का मंगलाचरण राजतिलक खाब्या, पुष्पा हिंगड़, प्रतीक्षा नैनावटी ने किया। सभा अध्यक्ष सुरेशचंद्र सिंघवी ने मुनिद्वय एवं समागत श्रावक-श्राविकाओं के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित की।

संस्कृति का संरक्षण - संस्कारों का संवर्द्धन जैन विधि - अमूल्य निधि

विवाह संस्कार

दिल्ली।

सरदारशहर निवासी, कोलकाता प्रवासी जयश्री लुणिया के सुपुत्र अजित लुणिया का विवाह संस्कार राजलदेसर निवासी, दिल्ली प्रवासी सुरेश कुमार जैन की सुपुत्री दिव्या जैन के साथ संस्कारक संजय खटेड़, उपासक व संस्कारक राजकुमार जैन व संस्कारक पवन गिड़िया ने विवाह संस्कार की सभी रस्मों को विधिपूर्वक संपन्न करवाया।

इस अवसर पर तेयुप, दिल्ली के अध्यक्ष विकास बोथरा ने परिषद की तरफ से वर-वधु के परिवारों व उपस्थित सभी का आभार ज्ञापन किया।

पाणिग्रहण संस्कार

राजाराजेश्वरी नगर।

कोलकाता निवासी अशोक कुमार बैद की सुपुत्री सुरभि बैद का शुभ विवाह बैंगलोर निवासी नरपत कुमार लुणिया के सुपुत्र आदित्य लुणिया के साथ जैन संस्कार विधि द्वारा सानंद आयोजित हुआ। संस्कारक राकेश दुधोड़िया तथा सह-संस्कारक दिनेश मरोठी द्वारा नमस्कार महामंत्र के सामुहिक स्मरण के साथ विवाह संस्कार प्रारंभ हुआ।

इस अवसर पर तेयुप उपाध्यक्ष अमित नौलखा, सहमंत्री सरल पटावरी, जैन संस्कार विधि के प्रभारी गौतम नाहटा तथा सहप्रभारी सौरभ दुगड़ उपस्थित थे। तेयुप की ओर से नवयुगल दंपति को शुभाशीष प्रदान किया एवं आभार ज्ञापन किया।

नामकरण संस्कार

जयपुर।

चंद्रिका-विशाल बैद के सुपुत्र व अंजु-राजेंद्र बैद के सुपौत्र एवं राजश्री-प्रवीण बैंगानी की दोहिती खुशबू का नामकरण संस्कार उनके आवास पर जैन संस्कार विधि से करवाया गया। संस्कारक श्रेयांस बैंगाणी ने विधि-विधानपूर्वक जैन संस्कार विधि से संपन्न करवाया।

कार्यक्रम में तेयुप, जयपुर के पूर्व अध्यक्ष सुधीर चोरड़िया, जैन संस्कार विधि के संयोजक बिनीत सुराणा, कार्यसमिति सदस्य कुलदीप बैद सहित अन्य गणमान्य महानुभावों की उपस्थिति में परिषद की ओर से मंगलभावना पत्रक भेंट किया गया।

नूतन प्रतिष्ठान शुभारंभ

अहमदाबाद।

हिमांशु कोचर के नूतन प्रतिष्ठान का शुभारंभ जैन संस्कार विधि से कराया गया। संस्कारक नाना लाल कोठारी, पंकज डांगी एवं दिनेश बागरेचा ने मांगलिक मंत्रोच्चार के साथ संपादित किया। तेयुप अध्यक्ष ललित बेंगवानी ने कोचर परिवार को शुभकामनाएँ प्रेषित की।

परिषद की ओर से परिवार को मंगलभावना पत्रक भेंट किया गया। कोचर परिवार से विनोद कोचर एवं दीपक लुणिया ने परिषद एवं संस्कारकों के प्रति आभार व्यक्त किया। कार्यक्रम का संचालन परिषद के सहमंत्री अतुल सिंघवी ने किया।

प्रतिष्ठान शुभारंभ

साउथ-कोलकाता।

यशवंत रामपुरिया एवं अंकित दुगड़ के नवीन प्रतिष्ठान का उद्‌घाटन जैन संस्कार विधि से किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ नमस्कार महामंत्र एवं मंलगपाठ के संगान के साथ हुआ। अभातेयुप के संस्कारक महेंद्र दुगड़ एवं प्रदीप सिंघी ने पूजन का कार्यक्रम संचालित किया। परिषद का प्रतिनिधित्व अध्यक्ष अमित पुगलिया एवं सचिव रोहित दुगड़ ने किया।

तेयुप के अध्यक्ष अमित पुगलिया ने परिवारजनों को शुभकामनाएँ दी।

नव प्रतिष्ठान शुभारंभ

भीलवाड़ा।

चंद्रप्रकाश नाबेड़ा के पुत्र हिमांशु नाबेड़ा के नव प्रतिष्ठान का मुहूर्त संस्कारक अशोक सिंघवी द्वारा संपूर्ण विधि-विधान सहित जैन संस्कार विधि से करवाया गया। इस अवसर पर अभातेयुप सदस्य कुलदीप मारू, तेयुप अध्यक्ष संदीप चोरड़िया सहित अनेक पदाधिकारीगण उपस्थित थे।

परिवार की ओर से पधारे हुए सभी अतिथियों का आभार प्रदर्शन हिमांशु नाबेड़ा द्वारा किया गया।

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
14 - 20 मार्च, 2022

✦ *चौबीस घंटे में दो घंटे का समय भी अगर शुभ योग में बीते तो इसे एक उपलब्धि मानना चाहिए।*

–आचार्यश्री महाश्रमण

आत्मा के आसपास

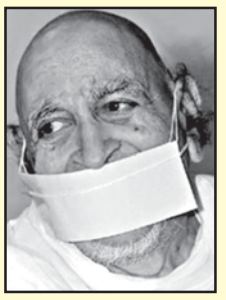

❑ **आचार्य तुलसी** ❑

प्रेक्षा : अनुप्रेक्षा

चैतन्य-केंद्रों का जागरण : भाव-तरंगों का परिष्कार

प्रश्न : वासना-विजय के लिए किस चैतन्य-केंद्र पर ध्यान करना चाहिए? उस संदर्भ में साधना के दूसरे प्रयोग क्या हो सकते हैं?

उत्तर : ब्रह्मचर्य का संबंध ब्रह्मकेंद्र के साथ है। ब्रह्म का अर्थ है–आत्मा। आत्मरमण के लिए इस केंद्र का अनिवार्य उपयोग है। इसका स्थान है–जिह्वा। जीभ का संबंध केवल खाने और बोलने से ही नहीं, कामवासना के साथ भी है। कामना के दो छोर हैं–जिह्वेंद्रिय और जननेंद्रिय। इन दोनों इंद्रियों पर नियंत्रण करने में सक्षम साधक ही वासना का विजेता बन सकता है।

कुछ लोगों का अभिमत है कि ध्यान के लिए इंद्रिय-निग्रह आवश्यक नहीं है। ध्यान का अभ्यास करने से वह स्वयं फलित होता है। यह विचार एक दृष्टि से ठीक हो सकता है। पर हर साधक इतना समर्थ नहीं होता कि वह संयम की साधना के बिना ध्यान से प्राप्त होने वाली ऊर्जा का सही उपयोग कर सकता है। संयम के अभाव में ऊर्जा का प्रवाह विपरीत दिशागामी हो जाए तो अनर्थ की संभावना को टाला नहीं जा सकता। इसलिए इंद्रिय-संयम भी आवश्यक है। उस व्यक्ति का वासना से मुक्त होना कठिन है, जिसने जीभ पर नियंत्रण नहीं पाया। जीभ की विद्युत-तरंगें शांत हैं तो जननेंद्रिय की विद्युत-तरंगें भी शांत रहेंगी। यद्यपि काम-केंद्र को उत्तेजित करने में सभी इंद्रियाँ निमित्त बनती हैं, पर उन सबमें जिह्वेंद्रिय का स्थान प्रमुख है।

ब्रह्मचर्य के संबंध में आज तक कुछ भी लिखा गया, जिस किसी ने लिखा, उसने आहार-संयम पर अवश्य लिखा है। यह विषय केवल स्थूल संबंध का नहीं है। जीभ और जननेंद्रिय के बीच रहे आंतरिक संबंध का है। इस आंतरिक संबंध के बारे में खोज हुई और उसके परिणाम साधना की दृष्टि से अचूक रहे। इंद्रिय-संयम, खाद्य-संयम, व्यस्त और नियमित जीवन तथा ध्यान के प्रयोगों से व्यक्ति वासना पर विजय पा सकता है। व्यावहारिक दृष्टि से भी उसे कुछ सावधानियाँ बरतने की जरूरत है। उनके साथ ब्रह्मकेंद्र पर ध्यान का दीर्घकालिक अभ्यास ब्रह्मचर्य को साधने का अमोघ साधन है।

आध्यात्मिक विकास के लिए अनुपम अवदान

केंद्र-विशुद्धि विशुद्ध है, कंठकूप अवधार।
शुभ जालंधर-बंध से, सहज सुधा-संचार।।
केंद्र परम आनंद का, देता सुख एकांत।
हृदय-चक्र हृच्चेतना से संबंद्ध नितांत।।
तमहर तैजस-केंद्र यह, है मणिपूर ललाम।
नाभिकमल आस्थान से, खुलते नव आयाम।।
स्वास्थ्य-केंद्र जो चक्र है, मूलाधार महान्।
इसको जागृत कर बढ़ें, करें सत्य संगान।।

प्रश्न : वर्तमान युग की अहम समस्या है–असंतुलन। थोड़ी-सी प्रतिकूलता का अनुभव होते ही व्यक्ति का संतुलन समाप्त हो जाता है। समूह-चेतना से जुड़ा हुआ एक भी व्यक्ति असंतुलित होता है तो उसका प्रभाव प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप में सब पर होता है। मानसिक असंतुलन की समस्या को स्थायी और ठोस समाधान देने के लिए आप ध्यान का कौन-सा प्रयोग सुझाते हैं?

उत्तर : शरीर-शास्त्र की दृष्टि से कंठमणि (थायरायड ग्लैंड) का बहुत महत्त्व है। शरीर में चय और अपचय की क्रिया इसके आधार पर चलती है। साधना की दृष्टि से यह विशुद्धि-केंद्र का स्थान है। भावना की स्वच्छता के लिए इस केंद्र पर ध्यान करना बहुत आवश्यक है। नीचे के केंद्रों पर ध्यान करने से उभरने वाली समस्याओं का समाधान इसके द्वारा हो सकता है। आवेश आदि की वृत्तियों के शोधन में भी इसका सक्रिय उपयोग है। स्वरयंत्र का शिथिलीकरण और विशुद्धिकेंद्र की प्रेक्षा–इन दोनों का योग मणिकांचन योग है। जिस साधक को यह योग उपलब्ध हो जाता है, वह जीवन की अनेक कठिनाइयों को पार कर उस बिंदु पर पहुँच जाता है, जहाँ से उसे अपनी मंजिल साफ दिखाई देने लगती है।

हठयोग की एक क्रिया है–जालंधर-बंध। ठुड्डी को कंठकूप में लगाने से वह क्रिया होती है। उस अवस्था में अमृत के स्राव जैसा अनुभव होता है। वह स्थान भी विशुद्धि-केंद्र के आसपास का ही स्थान है। मन की चंचलता मिटाने के लिए भी इस केंद्र का महत्त्वपूर्ण स्थान है। मानसिक असंतुलन की समस्या का सीधा समाधान है–स्वरयंत्र की शिथिलता और जालंधर-बंध। विशुद्धि-केंद्र पर ध्यान और कंठ का कायोत्सर्ग करने से विकल्प शांत होते हैं। असंतुलन तभी होता है, जब मन में विकल्प उठते हैं। विकल्प कम हुए, मन शांत हुआ और असंतुलन की स्थिति समाप्त हो गई।

(क्रमशः)

साँसों का इकतारा

❑ **साध्वीप्रमुखा कनकप्रभा** ❑

(६३)

बहुत दूर मंजिल थी मैं अनजाने पथ में हारी।
तभी तुम्हारे संकेतों ने सोई शक्ति उभारी।

अंतहीन इन इच्छाओं ने दिखलाई मृगमाया
दुनियावी आकर्षण ने फिर अनचाहे अटकाया
सिसक रही मेरे जीवन की साँसें जब सूनी-सी
सघन निराशा ने आकर मन पर अधिकार जमाया
मंजिल का अनुमान लगाकर चलना था जब भारी।।

समय सुहाना मस्त जिंदगी देखा स्वप्न अनूठा
पता नहीं क्यों अनायास ही मीठा सपना टूटा
किया बहुत आयास किंतु ना जुड़ पाया वह धागा
हुई सफलता दूर दूरतर साथ धैर्य का छूटा
झाँक रही दिल की धड़कन से जब कमजोरी सारी।।

कल्पित आशंका ने मुझको कई बार दहलाया
तुमने ही देकर आश्वासन भय का भूत भगाया
अनजानी राहों में जब आ सघन तिमिर ने घेरा
नहीं किसी ने कभी सफर में पल भर साथ निभाया
झंझा के झोंकों से जब मुरझाई जीवन-क्यारी।।

(६४)

गीत की अनुगूंज पहली दी सुनाई।
धरा है पुलकित गगन से मेघ बरसा।।

हो गया मौसम सुहाना स्वयं औचक
महक भर दी पवन में किसने अजाने
भाग्य की अनुकूलता से हो गए सच
आज तक देखे हुए सपने सयाने
मिला है नरलोक को वरदान ऐसा
जिसे पाने के लिए सुरलोक तरसा।।

आ गए हैं प्राण वीणा के सुरों में
कर रहे आकृष्ट कुदरत के नजारे
खिल रहे चेहरे किसी अज्ञात सुख से
चमकते हैं यामिनी में ज्यों सितारे
अधर-संपुट हो गया है धन्य जब से
नाम मंगलमय तुम्हारा देव! परसा।।

सुन रहे तुमको सभी तल्लीन होकर
बोल कोलाहल अपर का लग रहा है
विलक्षण आलोक नयनों से निकलता
दीप धरती का गगन को ठग रहा है
संघ-उपवन में खिली आभा अलौकिक
देख उसको चित्त क्या हर रोम हरसा।।

(क्रमशः)

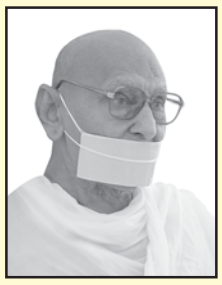

संबोधि

❑ **आचार्य महाप्रज्ञ** ❑

बंध-मोक्षवाद

भगवान् प्राह

(२०) अनासक्तिः पदार्थेषु, विरतिर्गदिता मया।
जागरूका भवेद् वृत्तिः, अप्रमादस्तथात्मनि।।

पदार्थों में जो अनासक्ति होती है, उसे मैंने 'विरति' कहा है। आत्मोपलब्धि के प्रति जो जागरूक वृत्ति होती है, उसे मैं 'अप्रमाद' कहता हूँ।

(२१) अशुभस्यापि योगस्य, त्यागो विरतिरिष्यते।
देशतः सर्वतश्चापि, यथाबलमुरीकृता।।

अशुभ योग का त्याग करना भी विरति कहलाता है। वह विरति यथाशक्ति–अंशतः या पूर्णतः स्वीकार की जाती है।

वैराग्य से व्यक्ति अनासक्त होता है। अनासक्त व्यक्ति का पदार्थों से आकर्षण सहज ही छूट जाता है। वह केवल तत्कालिक आसक्ति ही नहीं छोड़ता किंतु उसके अंकुर को जला डालता है। त्याग उसका उपाय है। त्यागी व्यक्ति का मन निःस्पृह बन जाता है। वह भविष्य में भी आसक्ति का संकल्प नहीं करता। त्याग के बिना अविरति का मार्ग बंद नहीं होता। पदार्थों के उपभोग व अनुपभोग का प्रश्न मुख्य नहीं है, मुख्य बात है अविरति की। अवरति उपभोग के बिना भी जीवित रहती है। त्याग उसे जीवित नहीं रहने देता।

मुनि अविरति का सर्वथा त्याग कर देता है। उन्हें जो मिले उसी में संतुष्ट रह जाते हैं। लेकिन सभी व्यक्ति मुनि नहीं होते। उनके लिए यथाशक्य अविरति के परिहार का विधान है। वे क्रमशः विरति की ओर बढ़ें और अविरति को कम करें।

(२२) क्रोधो मानं तथा माया, लोभश्चेति कषायकः।
एषां निरोध आख्यातोऽकषायः। शान्तिसाधनम्।।

क्रोध, मान, माया और लोभ–इन्हें कषाय कहा जाता है। इनके निरोध को मैंने 'अकषाय' कहा है। वह शांति का साधन है।

(२३) सर्वासाञ्च प्रवृत्तीनां, निरोधोऽयोग इष्यते।
अयोगत्वं समापन्ना, विमुक्तिं यान्ति योगिनः।।

सब प्रकार की प्रवृत्तियों के निरोध को 'अयोग' कहता हूँ। अयोग अवस्था को प्राप्त योगी मोक्ष को प्राप्त हो जाते हैं।

(२४) पूर्वं भवति सम्यक्त्वं, विरतिर्जायते ततः।
अप्रमादोऽकषायश्चाऽयोगो मुक्तिस्ततो ध्रुवम्।।

पहले सम्यक्त्व होता है, फिर विरति होती है। उसके पश्चात् क्रमशः अप्रमाद, और अयोग होता है। अयोगावस्था प्राप्त होते ही आत्मा की मुक्ति हो जाती है।

(क्रमशः)

अवबोध

❑ **मंत्री मुनि सुमेरमल 'लाडनूं'** ❑

धर्म बोध

दान धर्म

प्रश्न ४ : दान के और कौन से प्रकार हैं?

उत्तर : दान के निम्न दस प्रकार और हैं–
(१) अनुकंपा दान–करुणा से देना। (२) संग्रह दान–सहायता के लिए देना। (३) भय दान–भ से देना। (४) कारुण्य दान–मृतक के पीछे देना। (५) लज्जा दान–लज्जावश देना। (६) गौरव दान–गर्वपूर्वक देना। (७) अधर्म दान–हिंसा आदि पापों में आसक्त व्यक्तियों को देना। (८) धर्म दान–संयमी को देना। (९) करिष्यति दान–अमुक आगे सहयोग करेगा, इसलिए उसे देना। (१०) कृतमिति दान–अमुक ने सहयोग किया था, इसलिए उसे देना।

प्रश्न ५ : दस दान में लौकिक व लोकोत्तर कितने हैं?

उत्तर : धर्म दान लोकोत्तर व शेष नौ दान लौकिक हैं।

(क्रमशः)

उपासना

(भाग - एक)

❑ **आचार्य महाश्रमण** ❑

आचार्य मानतुङ्ग

दिगम्बर परम्परा के अनुसार महाकवि आचार्य मानतुङ्ग श्वेताम्बर थे। एक दिगम्बराचार्य द्वारा व्याधि-मुक्त होने पर उन्होंने दिगम्बर-मार्ग का अनुसरण किया और प्रश्न पूछा–'भगवन्! किं क्रियताम्'–मैं क्या करूं? गुरु ने आज्ञा दी–'परमात्मनों गुणगणस्तोत्रं विधीयताम्' परमात्मा के गुणों के स्तोत्र की रचना करो। आचार्य का आदेश प्राप्त कर मुनि मानतुङ्ग ने भक्तामर का निर्माण किया।

श्वेताम्बर परम्परा के अनुसार आचार्य मानतुङ्ग ने पहले दिगम्बर और बाद में श्वेताम्बर दीक्षा ग्रहण की। दिगंबर परम्परा के अनुसार वे पहले श्वेताम्बर, बाद में दिगम्बर बने। एक ही व्यक्ति के जीवन प्रसंग को लेकर दोनों परम्पराओं में विसङ्गति और विपर्यय कैसे हुआ इसके पीछे किसी न किसी प्रकार की मनोभावना की भूमिका अवश्य रही है। लगता है, भक्तामर स्तोत्र से संबंधित इस चामत्कारिक घटना के कारण आचार्य मानतुङ्ग का व्यक्तित्व इतना युगप्रभावी हो गया था जिससे इस स्तोत्र-रचना के प्रसङ्ग के साथ दोनों संप्रदायों ने उन्हें अपना मानने का प्रयत्न किया है।

जिन शासन में मानतुङ्ग धर्म के महान् उद्योतक आचार्य हुए। उन्होंने अपने शिष्यों को अनेक प्रकार से बोध देकर योग्य बनाया। गुणाकर नामक शिष्य को अपने पद पर स्थापित कर वे इंगिनी अनशन के साथ स्वर्ग को प्राप्त हुए।

प्रभावक चरित्र में आचार्य मानतुङ्ग को काशी-नरेश हर्षदेव के समकालीन माना गया है। डा ए बी कोथ के अभिमत में आचार्य मानतुङ्ग की कोठरियों के ताले या पाशबद्धता संसार बन्धन का रूपक है। इस प्रकार के रूपकों का निर्माण समय छठी-सातवीं शताब्दी है। इस आधार पर स्वर्गीय डॉक्टर नेमिचंद्र शास्त्री ने भक्तामर स्तोत्र के रचनाकार का समय विक्रम की छठी सदी का उत्तरार्द्ध या सातवीं सदी का पूर्वार्द्ध अनुमानित किया है।

आचार्य मानतुङ्ग के चामत्कारिक घटना-प्रसंग का सम्बन्ध किसी न किसी रूप में मयूर और बाण से अवश्य जुड़ा है। ये दोनों विद्वान् हर्ष की सभा में सम्मान-प्राप्त थे। इससे आचार्य मानतुङ्ग की समसामयिकता भी नरेश हर्षवर्द्धन के साथ प्रमाणित होती है। हर्ष का राज्याभिषेक समय ईस्वी सन् ६०८ बताया गया है।

हर्ष के समकालीन होने के कारण मानतुङ्गचार्य का समय वी०नि० की १२वीं (वि० ७ वीं) शताब्दी सम्भव है।

आचार्य अकलंक

भट्ट अकलंक दिगंबर परंपरा के कुशल वाग्मी, श्रेष्ठ कवि, शास्त्रार्थ-प्रवीण, गंभीर दार्शनिक आचार्य थे। जैन-न्याय के वे प्राण-प्रतिष्ठापक थे। शास्त्रविज्ञ आचार्यों में भी आचार्य भट्ट अकलंक अग्रणी थे।

भट्ट अकलंक का जन्म कांची निवासी ब्राह्मण परिवार में हुआ था। उनके पिता का नाम जिनदास था। माता का नाम जिनमती था। प्रभाचंद्र के कथाकोष एवं नेमिदत्त-कृत आराधना कथाकोष के अनुसार भट्ट अकलंक के पिता का नाम पुरुषोत्तम एवं माता का नाम पद्मावती था। पुरुषोत्तम मान्यखेट नरेश शुभतुंग के राज्य में मंत्री पद पर थे। भट्ट अकलंक के लघुभ्राता का नाम निष्कलंक था।

अकलंक और निष्कलंक युगल भ्राता असाधारण बुद्धि के स्वामी थे। अकलंक एक संधि और निष्कलंक द्विसन्धि (संस्थ) थे। किसी भी पद्य अथवा सूत्र-पाठ को अकलंक एक बार सुनकर और निष्कलंक दो बार सुनकर याद रख लेने में समर्थ थे। एक बार दोनों भ्राता माता-पिता के साथ जैन गुरु रविगुप्त के पास अष्टाह्निक पर्व के अवसर पर गए। उनके उपदेश से भावित होकर माता-पिता एवं बंधु-युगल ने ब्रह्मचर्य व्रत स्वीकार किया। दोनों के वयस्क होने पर उनके माता-पिता के उनको वैवाहिक सूत्र में बाँधना चाहा पर वे दोनों बालवय में ग्रहण की हुई ब्रह्मचर्य की प्रतिज्ञा में दृढ़ थे। उन्होंने शादी का प्रस्ताव नामंजूर कर दिया। माता-पिता ने समझाया–पुत्रो! वह व्रत तुम्हारे आठ दिन के लिए ही था। अतः उस प्रतिज्ञा से अब तुम मुक्त हो। इस समय विवाह करने से उस समय की गृहीत प्रतिज्ञा में किसी भी प्रकार के दोष की संभावना नहीं है। पिता की बातों को दोनों पुत्रों ने सुना, पर उनके विचारों में परिवर्तन नहीं हुआ। वे विनम्र होकर बोले–पूज्य पितृवर्य! व्रत ग्रहण किया उस समय काल की कोई चर्चा नहीं थी अतः हम जीवन-भर के लिए इस व्रत को निभाएँगे। माता-पिता का प्रयत्न असफल रहा। वे दोनों में से एक पुत्र को भी वैवाहिक सूत्र में न बाँध सके।

(क्रमशः)

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
14 - 20 मार्च, 2022

✦ *यदि एकाग्रता का लक्ष्य हो तो अनावश्यक विचारों में कमी भी आ सकती है।*

—आचार्यश्री महाश्रमण

७४वें अणुव्रत स्थापना दिवस के विविध आयोजन

अणुव्रत स्थापना दिवस

कटक।

अणुव्रत समिति, कटक द्वारा अणुव्रत विश्व भारती सोसाइटी के तत्त्वावधान में राष्ट्रीय स्तर पर आयोजित ७४वें अणुव्रत स्थापना दिवस के उपलक्ष्य में अणुव्रत काव्यधारा का आयोजन मुनि जिनेश कुमार जी के सान्निध्य में तेरापंथ भवन, भुवनेश्वर में आयोजित किया गया। कार्यक्रम में मुनि जिनेश कुमार जी ने अपने उद्‌बोधन में उपस्थित लोगों को अणुव्रत के छोटे-छोटे नियम, अहिंसा, नशामुक्ति, पर्यावरण सुरक्षा, नैतिकता आदि को अपनाकर स्वस्थ समाज की रचना हो सकेगी, ऐसी प्रेरणा प्रदान की।

मुनि कुनाल कुमार जी ने अणुव्रत गीत का संगान किया। कार्यक्रम में मंगलाचरण मधुर गायिकाएँ सरगम फाइनलिस्ट पूजा चोरड़िया एवं प्रियंका सिंघी ने किया। अध्यक्ष मुकेश डूंगरवाल ने सभी आगंतुकों का स्वागत किया। तत्पश्चात आमंत्रित कवियों—किशन खंडेलवाल, डॉ० राजुल त्रिपाठी, डॉ० अंजुमन आरा, अर्चना तिवारी, अनीता भवसिंका, संघमित्रा रायगुरु, रिमझिम झा ने कावयपाठ किया।

कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में संस्था शिरोमणी श्री जैन श्वेतांबर तेरापंथी महासभा के अध्यक्ष मनसुखलाल सेठिया, सम्मानित अतिथि के रूप में उत्कल अनूज हिंदी के संस्थापक सुभाष भूरा, तेरापंथ सभा, भुवनेश्वर के अध्यक्ष बच्छराज बैताला ने भी अणुव्रत पर अपने विचार रखे।

कार्यक्रम का संचालन पुष्पा सिंघी ने किया। आभार ज्ञापन कोषाध्यक्ष संतोष सिंघी ने किया। कार्यक्रम को सफल बनाने में मंत्री विकास नवलखा, संगठन मंत्री प्रतीक सिंघी, प्रचार मंत्री कमल बैद एवं रणजीत दुगड़ का विशेष सहयोग रहा।

अणुव्रत के छोटे-छोटे नियमों की पालना से दशा और दिशा बदल सकती है

बैंगलुरु।

अणुव्रत समिति के संयोजन में अणुव्रत विश्व भारती के तत्त्वावधान में तेरापंथी सभा भवन के प्रांगण में अणुव्रत काव्य धारा का आयोजन हुआ। साध्वीवृंद के नमस्कार महामंत्र मंगलाचरण से कार्यक्रम का शुभारंभ हुआ। शासनश्री साध्वी कंचनप्रभाजी ने कहा कि वर्तमान परिप्रेक्ष्य में पाश्चात्य सभ्यता चरम सीमा पर है। एक ऐसा युग था जहाँ चारों ओर सांप्रदायिक हिंसा, भ्रष्टाचार एवं अनेक प्रकार की हिंसक प्रवृत्तियाँ अपने चरम सीमा पर थीं। उस परिप्रेक्ष्य को युग के महानायक गणाधिपति पूज्य गुरुदेवश्री तुलसी ने अपनी ओजस्वी, दूरदर्शी निगाहों से महसूस किया व चिंतन किया कि व्यक्ति सन्मार्ग पर चलकर समाज व राष्ट्र के कल्याण हेतु कैसे सहभागी बन सकता है। अणुव्रत के छोटे-छोटे नियमों को अगर हर व्यक्ति अपने जीवन में उतार ले तो अवश्य आदर्श राष्ट्र की स्थापना हो सकती है।

साध्वी लावण्यश्री जी ने कहा कि अणुव्रत एक ऐसा अस्त्र है जिसमें किसी प्रकार की हिंसा नहीं है, इसे अपनाने में फायदा ही फायदा है। काव्यधारा कार्यक्रम की शुरुआत सरस्वती वंदना से हुई। अणुव्रत समिति, बैंगलोर के अध्यक्ष शांतिलाल पोरवाल ने स्वागत वक्तव्य दिया। इस आयोजन के केंद्रीय संयोजक ललित बाबेल ने आयोजन की रूपरेखा रखी। राष्ट्रीय सहमंत्री कनहैयालाल चिप्पड़ ने मुख्य अध्यक्षता करते हुए अपने भावों की अभिव्यक्ति दी। तेरापंथ सभा उपाध्यक्ष कैलाश बोराणा ने सभी संस्थाओं का स्वागत किया।

कवि मिठू मिठास, अनिल अवस्थी, ईश्वर करुण, डॉ० सुनील तरुण, डॉ० श्रुति शारदा व स्वीटी सिंगल ने अपनी काव्यधारा की प्रस्तुति से श्रोताओं को भावविभोर कर दिया। अणुव्रत समिति द्वारा सभी कविगण का सम्मान किया गया।

कार्यक्रम के प्रायोजक कन्हैयालाल राजेश कुमार चिप्पड़ का अभिनंदन किया गया। इस अवसर पर महासभा से प्रकाश लोढ़ा, तेरापंथ ट्रस्ट अध्यक्ष गौतमचंद मूथा, तेयुप अध्यक्ष विनय बैद, महिला मंडल अध्यक्षा स्वर्णमाला पोखरना, विजयनगर सभा अध्यक्ष राजेश चावत, शुभ-लाभ पत्रिका के संपादक राजेंद्र व्यास, सहित अनेक पदाधिकारीगण एवं सदस्यों की उपस्थिति रही। कार्यक्रम का संचालन संयोजिका सुमित्रा बरड़ियाने किया। अणुव्रत समिति मंत्री माणकचंद संचेती ने आभार ज्ञापन किया।

अणुव्रत काव्यधारा में अणुव्रत संकल्पों की सुर सरिता

जयपुर।

अणुव्रत के ७४वें स्थापना दिवस के उपलक्ष्य में अणुव्रत विश्व भारती के तत्त्वावधान में अणुव्रत समिति, जयपुर द्वारा अणुविभा भवन में अणुव्रत काव्यधारा का आयोजन किया गया। कार्यक्रम की शुरुआत में अणुव्रत समिति अध्यक्ष विमल गोलछा ने कवियों तथा अतिथियों का स्वागत किया। राजेश धाड़ेवा ने अणुव्रत गीत की प्रस्तुति दी। अणुविभा अध्यक्ष संचय जैन ने कहा कि अणुव्रत अनेक समस्याओं से त्रस्त विश्व की जरूरत है। उन्होंने अणुविभा के उद्देश्यों तथा क्रिया-कलापों पर प्रकाश डाला।

विनोद मोदी ने काव्य की शुरुआत कविता से की। वहीं डॉ० नीरू जैन ने अपनी काव्य रचना के माध्यम से विश्व की शांति का आह्वान किया। केसरदेवी मारवाड़ी ने वर्तमान जीवन में आई विसंगतियों पर व्यंग्य किया।

साध्वी शीलयशाजी ने अपनी कविता के माध्यम से भ्रूण हत्या रोकने का संदेश दिया। शासनश्री साध्वी धनश्री जी ने अणुव्रत के नियमों एवं इनकी प्रासंगिता पर प्रकाश डाला। साध्वी सलिलयशा जी ने जीवन में प्रामाणिक बने रहने का आह्वान किया।

वरिष्ठ कवि इकराम राजस्थानी, अणुव्रत लेखक पुरस्कार से सम्मानित फारूक आफरीदी काव्यमय प्रस्तुति दी। अणुव्रत लेखक पुरस्कार से सम्मानित वयोवृद्ध कवि और गीतकार डॉ० नरेंद्र शर्मा 'कुसुम' प्रस्तुति दी। सभी कवियों का अणुव्रत साहित्य तथा अणुव्रत डायरी भेंट कर सम्मानित किया।

कार्यक्रम का संचालन प्रदीप नाहटा ने किया। इस अवसर पर अणुविभा के वरिष्ठ उपाध्यक्ष अविनाश नाहर, अणुविभा, जयपुर केंद्र के अध्यक्ष पन्नालाल बैद, संघीय संस्था के अध्यक्ष नरेश मेहता, मंत्री पन्नालाल पुगलिया, महिला मंडल, शहर की अध्यक्ष निर्मला सुराणा, टीपीएफ अध्यक्ष संदीप जैन सहित अनेक गणमान्य व्यक्ति उपस्थित थे। अणुव्रत समिति मंत्री डॉ० जयश्री सिद्धा ने सभी का आभार व्यक्त किया।

अणुव्रत काव्यधारा का आयोजन

जसोल।

समणी हंसप्रज्ञा जी, समणी मानसप्रज्ञा जी के सान्निध्य में पुराना ओसवाल भवन में अणुव्रत विश्व भारती, सोसायटी के तत्त्वावधान में राष्ट्रीय स्तर पर ७४वें स्थापना दिवस के उपलक्ष्य में अणुव्रत काव्यधारा कार्यक्रम का आगाज हुआ। सर्वप्रथम समणी हंसप्रज्ञा जी ने नमस्कार महामंत्र के साथ कार्यक्रम का शुभारंभ हुआ। मंगलाचरण महिला मंडल एवं कन्या मंडल ने व नवकार स्कूल की बालिकाओं द्वारा अणुव्रत गीत से हुआ। स्वागत भाषण समिति के अध्यक्ष पारसमल गोलेच्छा ने प्रस्तुत किया। समणी हंसप्रज्ञा जी ने कहा कि आचार्यश्री तुलसी ने इंसान को इंसानियत का रास्ता दिखाया। आचार्यश्री तुलसी ने अणुव्रत आंदोलन के माध्यम से मानव को मानवता अपनाने का अह्वान किया।

मुख्य अतिथि बालोतरा नगर परिषद की चेयरमैन सुमित्रा जैन एवं समारोह के अध्यक्ष डॉ० राजेंद्र जैन अपने विचार व्यक्त किए।

समणी मानसप्रज्ञा जी ने कहा कि नशा वनाश का द्वार है, बीड़ी-सिगरेट, पान-पराग, गुटखा-जर्दा आदि शरीर के लिए अत्यंत घातक है। विशिष्ट अतिथि राष्ट्रीय संघ के समरसता संयोजक देवेंद्र माली, डॉ० सिम्मी जैन ने अपने विचार व्यक्त किए। सुप्रसिद्ध कविगण—कवि अशोक प्रदीप, कमलेश चोपड़ा, अमृतलाल बुरड़, सीए ओमप्रकाश बांठिया, सुरेश डोसी, शंकरलाल ढेलड़िया, भूपतराज कोठारी, सफरू खांन आदि प्रबुद्धजनों ने अणुव्रत आचार संहिता, कविताओं के द्वारा सबको प्रभावित किया।

इस अवसर पर गौतमचंद सालेचा, मोतीलाल जीरावला, भंवरलाल भंसाली, डूंगरचंद सालेचा, डूंगरचंद भंसाली, बाबूलाल बोकड़िया, चंपालाल श्रीश्रीमाल, शांतिलाल भंसाली, तरुण भंसाली सहित तेरापंथ सभा, तेयुप, महिला मंडल, कन्या मंडल एवं अणुव्रत समिति, वनकार स्कूल के सदस्य, विद्यार्थीगण एवं समाज के गणमान्य लोग उपस्थित थे।

सभी आगंतुक अतिथियों का स्वागत अणुव्रत दुपट्टा पहनाकर व साहित्य के द्वारा सम्मान किया गया। कार्यक्रम का संचालन अणुव्रत समिति के प्रभारी भूपतराज कोठारी ने किया।

अणुव्रत इंसान को महान बनाता है

नाथद्वारा।

मुनि संजय कुमार जी की प्रेरणा से, मुनि प्रकाश कुमार जी एवं मुनि सिद्धप्रज्ञ जी के सान्निध्य में ७४वाँ अणुव्रत स्थापना दिवस न्यू राइज सेकंडरी विद्यालय, नाथद्वारा में मनाया गया। कार्यक्रम का प्रारंभ स्कूल के छात्रों ने अणुव्रत गीत के माध्यम से किया। मुनि प्रकाश कुमार जी ने कहा कि आज अणुव्रत का महत्त्व ज्यादा उपयोगी बनता जा रहा है। अणुव्रत के माध्यम से हम गरीब की झोंपड़ी से लेकर राष्ट्रपति भवन तक आसानी से पहुँच सकते हैं।

मुनि सिद्धप्रज्ञ जी ने कहा कि विद्यार्थी का सर्वांगीण विकास तभी हो सकता है जब उसके जीवन में अणुव्रत, जीवन-विज्ञान और प्रेक्षाध्यान उतरे। जो विद्यार्थी प्रारंभ से ही जीवन का लक्ष्य बनाता है, वह जीवन में सफल होता है। इस अवसर पर मुनि प्रकाश कुमार जी ने कवि सम्मेलन को संबोधित करते हुए रोचक कविता पाठ किया। मुनि सिद्धप्रज्ञ जी ने जीवन-विज्ञान के प्रयोग करवाए।

कवि सम्मेलन के दौरान अंतर्राष्ट्रीय कवि गिरीश विद्रोही, प्रमोद सनाढ्य, साबिर शुक्रिया, सुभाष सामोता, भगवान लाल बंसीलाल एवं अबसार शुक्रिया ने उपयोगी एवं जोशी अंदाज में कविताओं का पाठ किया।

इस अवसर पर तेरापंथ महिला मंडल की ओर से मंजु पोरवाल आदि बहनों ने गीत का संगान किया। प्रारंभ से स्कूल के संचालक संजय गुर्जर ने अतिथियों का स्वागत किया। कमलेश धाकड़ एवं समिति के अध्यक्ष साबिर शुक्रिया ने अणुव्रत की जानकारी देते हुए अपने विचार व्यक्त किए। अणुविभा के राष्ट्रीय अध्यक्ष संचय जैन ने कहा कि इस बात की मुझे खुशी है कि इस विद्यालय में बच्चों में अच्छा अनुशासन दिखाई दे रहा है और अणुव्रत के माध्यम से बच्चों का सर्वांगीण विकास हो रहा है। अपेक्षा है हम अणुव्रत को समझें और इसके प्रयोग को समझकर इसका प्रशिक्षण प्राप्त करें, इससे पूरे देश का भविष्य उज्ज्वल बन सकता है।

कार्यक्रम का संचालन गिरीश विद्रोही ने किया। इस अवसर पर समस्त महानुभाव का सम्मान किया गया। लक्ष्मीलाल आदि महानुभाव ने स्कूल की ओर से आभार ज्ञापन किया। कार्यक्रम में बड़ी संख्या में स्कूल के बच्चे और स्टॉफ उपस्थित थे। फेसबुक के माध्यम अनेक लोगों ने कार्यक्रम को लाइव देखा। कार्यक्रम को सफल बनाने में अणुव्रत समिति, नाथद्वारा के अध्यक्ष साबिर शुक्रिया, कमलेश धाकड़, गौरव वैद मूथा आदि का सराहनीय सहयोग रहा।

प्रेक्षावाहिनी कार्यक्रम का आयोजन

जीन्द।

जीन्द तेरापंथ प्रेक्षा वाहिनी द्वारा प्रेक्षावाहिनी सभा भवन में लगाई गई। शुभारंभ प्रेक्षा गीत के माध्यम से महिला मंडल की बहनों ने किया। कायोत्सर्ग के बारे में मास्टर नारायण सिंह रोहिल्ला ने बताया तथा प्रेक्षाध्यान का प्रेक्टिकल प्रयोग भी करवाया गया।

मुनि जम्बूकुमार जी का सान्निध्य प्राप्त हुआ। मंगलभावना डॉ० सुरेश जैन द्वारा करवाई गई। इस अवसर पर जीन्द तेरापंथ प्रेक्षावाहिनी के संवाहक कुणाल मित्तल, महिला मंडल अध्यक्ष उपासिका कांता मित्तल, ज्ञानशाला प्रभारी स्वाति गोयल, मधु जैन, विमल जैन आदि उपस्थित रहे।

प्रेक्षाध्यान कार्यशाला का आयोजन

हैदराबाद।

प्रेक्षा फाउंडेशन के तत्त्वावधान में प्रेक्षाध्यान कार्यशाला का आयोजन तेरापंथ भवन, डी०वी० कॉलोनी, सिकंदराबाद में प्रेक्षावाहिनी द्वारा किया गया। प्रेक्षाध्यान कार्यशाला का शुभारंभ नमस्कार महामंत्र व त्रिपदी वंदना से हुआ। कार्यशाला में नागपुर से समागत प्रेक्षा प्रशिक्षक आनंद सेठिया ने वार्मअप एक्सरसाइज, आसन-प्राणायाम, चार चरण ध्यान करवाया। प्रेक्षा फाउंडेशन के सह-संयोजक एवं प्रेक्षा प्रशिक्षक अमित जैन ने प्रेक्षाध्यान के सिद्धांतों पर चर्चा की व भाई-बहनों के प्रश्नों का समाधान किया।

कार्यशाला का संचालन प्रेक्षावाहिनी, हैदराबाद के संवाहक रीता सुराणा ने किया। प्रेक्षावाहिनी की बहनों ने प्रेक्षा गीत का सामुहिक संगान किया। प्रेक्षा प्रशिक्षकों का मोमेटों के द्वारा सम्मान किया गया। आर्थिक सहयोग देने के लिए सुरेंद्र, सुभाग बांठिया का भी मोमेंटो द्वारा सम्मान किया गया।

इस अवसर पर सिकंदराबाद सभा के अध्यक्ष सुरेश सुराणा, तेममं, मंडल की अध्यक्षा व प्रेक्षावाहिनी की सह-संवाहक अनिता गिड़िया, तेयुप के अध्यक्ष प्रवीण श्यामसुखा, अणुव्रत समिति के मंत्री अशोक मेड़तवाल, वैलफेयर सोसाइटी से बाबूलाल सेठिया ने शुभकामनाएँ दी।

संयोजक संतोष पींचा, विनोद दुगड़, शकुंतला बुच्चा, मीनाक्षी सुराणा, रजनी श्यामसुखा, वर्षा बैद, निशा दुगड़, निशा पींचा चाँद बैद रहे। कार्यक्रम में लगभग ७० भाई-बहनों ने भाग लिया।

कारागृह सुधारगृह बने

भुवनेश्वर।

मुनि जिनेश कुमार जी का भुवनेश्वर स्थित कारागृह में कैदियों के मध्य प्रवचन हुआ। इस अवसर पर मुनि जिनेश कुमार जी ने कहा कि अपराध जिंदगी की सबसे बड़ी विस्फोटक सामग्री है। अपराध जीवन को विनाशक बना देता है। मुनिश्री ने कहा कि मनुष्य गलती का पुतलना है। गलती होना स्वाभाविक है। गलती को स्वीकार करने वाला व्यक्ति अपने हृदय को सरल कर लेता है।

मुनिश्री ने आगे कहा कि जेल मंदिर है, कारागृह सुधार गृह है। व्यक्ति को आत्मनिरीक्षण करना चाहिए। मैंने जो गलतियाँ की हैं अब भविष्य में नहीं करूँगा। जप, तप, स्वाध्याय, ध्यान, सत्संगत साधु संपर्क में रहने से व्यक्ति कुसंगति से अपराध से बच जाता है। सद्भावना, नैतिकता, नशामुक्ति की साधना करें। अणुव्रत प्रेक्षाध्यान, अहिंसा यात्रा की जानकारी देते हुए मुनिश्री ने ध्यान के प्रयोग करवाए। ५ कैदियों ने नशे का त्याग किया। १०-१५ व्यक्तियों ने कहा कि हम भविष्य में अपराध नहीं करेंगे।

जेलर सत्यप्रकाश साई ने मुनिजनों का स्वागत करते हुए विचार रखे। तेरापंथ सभा के अध्यक्ष बच्छराज बेताला ने विचार रखे। मुनि कुणाल कुमार जी ने गीत प्रस्तुत किया। मंत्री पारस सुराणा ने मुनिश्री का परिचय देते हुए कार्यक्रम का संचालन किया। इस अवसर पर दो सह-जेलर व संजय जैन, जितेंद्र बैद आदि उपस्थित थे।

मंगलभावना समारोह समारोह

गांधीनगर-बैंगलोर।

साध्वी लावण्यश्री जी के मंगलभावना के अवसर पर शासनश्री साध्वी कंचनप्रभा जी के कहा कि तेरापंथ धर्मसंघ में साधना के साथ अनुशासन व मर्यादा एवं विनम्रता का विशेष महत्त्व है। साध्वी लावण्यश्री जी का गांधीनगर का चातुर्मास संघप्रभावना वाला रहा। साध्वी लावण्यश्री जी ने कहा कि शासनश्री जी के बैंलगोर विराजने से हम निश्चिंत हो गए। अभी काफी दिन साथ रहने का अवसर मिला, आपकी विशेष कृपा हम पर रही। सभी संस्थाओं से खमतखामणा किया।

शासनश्री साध्वी मंजुरेखा जी ने कहा कि गांधीनगर का यह भवन कार्यकर्ताओं की निर्माण स्थली है। साध्वी लावण्यश्री जी ने अपने गांधीनगर चातुर्मास में अपनी श्रम शक्ति से संघ की विशेष अलख जगाई है, जिसे जमाना याद रखेगा।

साध्वी उदितप्रभाजी, साध्वी निर्भयप्रभाजी, साध्वी चेलनाश्री जी ने वक्तव्य के माध्यम से मंगलकामना अभिव्यक्त की। साध्वी सिद्धांतश्री जी व साध्वी दर्शितप्रभाजी ने गीतिका के माध्यम से गुरुदेव के प्रति कृतज्ञता व बैंगलोर प्रवास का उल्लेख व शासनश्री जी के प्रति आदर भाव व्यक्त किए।

सभाध्यक्ष सुरेश दक, ट्रस्ट अध्यक्ष गौतम मूथा, महिला मंडल अध्यक्षा स्वर्णमाला पोखरना, तेयुप अध्यक्ष विनय बैद, अणुव्रत समिति अध्यक्ष शांतिलाल पोरवाल, यशवंतपुर सभा मंत्री महावीर ओस्तवाल, राजराजेश्वरी सभाध्यक्ष मनोज डागा सहित सभा-संस्थाओं के पदाधिकारीगण अपने वक्तव्य द्वारा मंगलभावना व्यक्त की। महिला मंडल की बहनें, ज्ञानशाला प्रशिक्षक बहनें, आदित्य मांडोत, बहादुर सेठिया ने गीतिका प्रस्तुत की।

हिरियूर से समागत जयंतीलाल चोपड़ा, दीपचंद चोपड़ा व तेजराज चोपड़ा ने शासनश्री साध्वी कंचनप्रभाजी से चातुर्मास हेतु जल्दी पधारो की अर्ज की।

कार्यक्रम का संचालन सभा मंत्री नवनीत मूथा ने किया। इस अवसर पर अनेक गणमान्यजन के साथ-साथ उपाध्यक्ष कैलाश बोराणा, महावीर धोका, कोषाध्यक्ष बाबूलाल बाफना व हिरियूर, यशवंतपुर, विजयनगर, राजराजेशवरी नगर, शांतिनगर, टेनरी रोड, शेषाद्रीपुरम, राजाजीनगर, कंगेरी से विशेष श्रावक-श्राविकाएँ उपस्थित रहे।

आध्यात्मिक मिलन समारोह

छापर।

लाडनूं से विहार करते हुए मुनि अमृत कुमार जी स्वामी और मुनि स्वास्तिक कुमार जी का अपने सहयोगी संत मुनि उपशम कुमार जी व मुनि सुपार्श्व कुमार जी के साथ छापर पधारना हुआ। छापर सेवाकेंद्र व्यवस्थापक 'तपोमूर्ति' मुनि पृथ्वीराज जी स्वामी, मुनि विमल कुमार जी स्वामी, सहवर्ती संतों के साथ आपको लेने मार्ग में आगे तक पधारे। मार्ग में आध्यात्मिक मिलन के आपसी वंदना-सुखपृच्छा-संघीय वात्सल्य और भक्ति भावना से ओतप्रोत दृश्य सबको सहज ही आनंदित-आह्लादित कर रहे थे।

सभी का भिक्षु साधना केंद्र में पदार्पण हुआ। यहाँ अभी संतों के कुल १३ ठाणा हो गए हैं। छापर में पहले से ही प्रवासित साध्वी कनकश्री जी (राजगढ़) की सहवर्ती साध्वियों ने भी साधना केंद्र पधारकर सभी संतों के दर्शन कर सुखपृच्छा की।

कमल दुधोड़िया, बंसीलाल बोथरा, विनोद नाहटा, मन्नालाल नाहटा, आलोक नाहटा, तेयुप कोषाध्यक्ष योगेश दुधोड़िया, आनंद दुधोड़िया, मोहित, गुलाब बाई, दीपक, मनोज नाहटा, पन्नालाल प्रजापत आदि कई श्रावक-श्राविकाएँ सेवा में उपस्थित थे।

टीपीएफ के विविध कार्यक्रम

फेमिना विंग-साउंड हीलिंग विथ लाइट फ्रीक्वेंसी कार्यशाला

साउथ कोलकाता।

नारी धरती माँ का स्वरूप है। जिस प्रकार धरती माता सारे संसार के प्राणियों की निस्वार्थ भाव से रक्षा करती है, ठीक उसी प्रकार नारी अपने घर और प्रोफेशनल कैरियर के बीच सामंजस्य स्थापित कर अपने परिवार का समुचित ख्याल रखती है। इस समूचे जीवनचक्र में वह 'मैं खुश रहना चाहती हूँ; को भूलकर दूसरों को खुश करने में लगी रहती है। इसी विषय को ध्यान में रखते हुए टीपीएफ की फेमिना विंग ने समाज की मोटीवेटर एवं हीलर डॉ० सुनीता नाहआ जो स्वयं ३० से ज्यादा हीलिंग थैरेपी की ज्ञाता है, से अनुरोध कर साउंड हीलिंग विथ लाइफ फ्रीक्वेंसी के माध्यम से 'मैं खुश रहना चाहती हूँ और यह मेरा अधिकार है' कार्यशाला का आयोजन यिका गया।

टीपीएफ साउथ कोलकाता के अध्यक्ष आलोक चोपड़ा ने अपने अध्यक्षीय स्वागत वक्तव्य में सभी का हार्दिक अभिनंदन किया। कार्यक्रम की शुरुआत खुशबू दुगड़ ने मंगलाचरण से की। इसके पश्चात कार्यक्रम की संयोजिका कंचन सिरोहिया ने कार्यशाला की प्रमुख वक्ता डॉ० सुनीता नाहटा का सभी से परिचय करवाया।

इस कार्यशाला में सुनीता साउंड हीलिंग विथ लाइट फ्रीक्वेंसी के माध्यम से सभी को मेडिटेशन करवाया। टीपीएफ के ईस्ट जोन १ के अध्यक्ष सुशील चोपड़ा ने कहा कि टीपीएफ के आयोजन को हमें घर-घर पहुँचाना है, जिससे हमारे समाज के लोगों को सही मार्गदर्शन मिल सके। कार्यक्रम में विशेष उपस्थिति टीपीएफ मीडिया के राष्ट्र प्रभारी राहुल राठौड़, ईस्ट जोन १ के मंत्री गणेश बैद, पूर्व राष्ट्रीय मंत्री सुशील चोरड़िया, राजसमंद ब्रांच, अध्यक्ष आर०के० जैन, कोलकाता ब्रांच अध्यक्ष प्रीति जैन, फोरम के वरिष्ठ सदस्य बाबूलाल बिनायकिया की रही। कुल ६२ जनों की उपस्थिति रही।

टीपीएफ के मंत्री प्रवीण कुमार सिरोहिया ने कार्यक्रम में पधारे हुए सभी अतिथियों, वक्ताओं, सदस्यों एवं अन्य संस्थाओं के गणमान्य व्यक्तियों का आभार ज्ञापन किया। कार्यक्रम का संचालन टीपीएफ साउथ कोलकाता की फेमिना विंग संयोजिका कंचन सिरोहिया का रहा।

अणुव्रत स्थापना दिवस पर अणुव्रत काव्यधारा का आयोजन

गुवाहाटी।

अणुव्रत स्थापना दिवस के अवसर पर अणुविभा द्वारा निर्देशित अणुव्रत काव्यधारा नामक काव्यगोष्ठी का आयोजन अणुव्रत समिति, गुवाहाटी द्वारा किया गया। सर्वप्रथम अणुविभा के असम प्रभारी तथा अणुव्रत समिति के उपाध्यक्ष बजरंग बैद, तेरापंथी सभा के अध्यक्ष झंकार दुधोड़िया, तेरापंथ महिला मंडल की उपाध्यक्ष अमराव बोथरा, अणुव्रत समिति, गुवाहाटी के पूर्व अध्यक्ष निर्मल श्यामसुखा, टीपीएफ अध्यक्ष रामचंद्र संचेती, तेयुप के मंत्री रोहित सुराणा, अणुव्रत काव्यधारा के पूर्वोत्तर प्रभारी अनिल पटवा, अणुव्रत समिति के मंत्री पवन जम्मड़ सहित सभा-संस्थाओं के पदाधिकारीगणों ने अणुव्रत गीत के साथ सभा का शुभारंभ किया। तेरापंथ सभा के अध्यक्ष ने अणुव्रत आचार संहिता का वाचन किया एवं अपना वक्तव्य दिया। कार्यक्रम के अध्यक्ष बजरंग बैद ने अपने संबोधन में अणुव्रत के विषय में जानकारियाँ दी।

स्थानीय कवियों ने अणुव्रत आचार संहिता पर आधारित कविताओं से समां बाँधा। कवियों में हरकीरत हीर, सौमित्रम, सुरेंद्र सिंह, वरिष्ठ साहित्यकार शंकरलाल पारीक, मालविका रॉय मेधी दास, प्रेमकुमार, मनोज नायाब, प्रज्ञा शर्मा, प्रतिष्ठित रचनाकार ललित कुमार झा, किशोर अग्रवाल, जया जैन, कांता बच्छावत, कंचन केजरीवाल, हेमलता गोलछा आदि कविताओं की लगातार बौछारों से श्रोताओं का मन मोह लिया। सभी आमंत्रित कवियों का दुपट्टा ओढ़ाकर तथा अणुव्रत पर आधारित पुस्तक, अणुव्रत डायरी एवं एक साल के लिए अणुव्रत पत्रिका भेंट कर अभिनंदन किया गया।

कार्यक्रम का संचालन एवं संयोजन हेमलता गोलछा तथा कार्यकारिणी सदस्य कंचन केजरीवाल ने किया। कार्यक्रम का अणुविभा फेसबुक पेज पर लाइव प्रसारित किया गया, जिसकी बारडोली समिति कोषाध्यक्ष संजय चोरड़िया ने संभाल रखी। पिछले वर्ष अणुव्रत उद्बोधन सप्ताह के अंतर्गत आयोजित निबंध प्रतियोगिता के पुरस्कार भी बच्चों को प्रदान किए गए। अणुव्रत समिति, गुवाहाटी के मंत्री पवन जम्मड़ द्वारा धन्यवाद ज्ञापन के साथ कार्यक्रम का समापन किया गया।

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
14 - 20 मार्च, 2022

✦ *न्यायालय की प्रतिष्ठा और गरिमा बनाए रखने के लिए अपेक्षित है कि न्यायाधीशों के मन में सच्चाई के प्रति निष्ठा बनी रहे।*
—आचार्यश्री महाश्रमण

तेयुप के विविध कार्यक्रमों के आयोजन

सेवा कार्य

बारडोली।

तेयुप, बारडोली के मार्गदर्शन में तेरापंथ किशोर मंडल द्वारा वृद्धाश्रम में भोजन वितरण अंतर्गत सेवा कार्य किया गया। प्रायोजक अनुदानदाता परिवार मोता गाँव निवासी राहुल कुमार गोखरू के जनमदिवस के अवसर पर किशोर मंडल द्वारा कार्यक्रम संपादित किया गया। तेरापंथ किशोर मंडल, बारडोली सह-संयोजक मनन बड़ौला, विकास पितलिया, अंकुर बाफना, जयेश मेहता एवं पूर्व संयोजक उत्सव मेहता का विशेष श्रम एवं सहयोग रहा।

समस्त वृद्ध परिवारजनों को नमस्कार महामंत्रोच्चार कर उनके मंगलमय स्वास्थ्य हेतु आध्यात्मिक मंगलकामना प्रदान की गई।

नि:शुल्क हेल्थ चेकअप कैंप का आयोजन

बैंगलोर।

तेयुप द्वारा संचालित आचार्य तुलसी डायग्नोस्टिक सेंटर आडगुड़ी व आचार्य तुलसी डायग्नोस्टिक सेंटर यशवंतपुर को एक साल संपूर्ण होने पर डायग्नोस्टिक सेंटर द्वारा तीन दिवसीय नि:शुल्क चेकअप कैंप का आयोजन किया गया। इस कैंप के तहत नि:शुल्क शुगर चेकअप, डेंटल चेकअप, लिवर फंक्शन टेस्ट, लिपिड प्रोफाइल व नेत्र जाँच का नि:शुल्क सेवा दी गई।

एटीडीसी आडगुड़ी में कुल ८२ लाभार्थियों ने कैंप से सेवा प्राप्त की व एटीडीसी यशवंतपुर से कुल ७० लाभार्थियों द्वारा सेवा ली गई। कैंप में एटीडीसी प्रभारी रजत बैद, सह-प्रभारी सुरेश संचेती, संयोजक दीपक बाबेल, संयोजक संदीप चोपड़ा, अध्यक्ष विनय बैद, उपाध्यक्ष रंजीत राखेचा, उपाध्यक्ष भेरूलाप पोखरणा, मंत्री प्रवीण बोहरा, सहमंत्री विवेक मरोठी, सहमंत्री प्रदीप चोपड़ा, निवर्तमान अध्यक्ष विनोद मूथा व टीम से जितेंद्र कोचर, जितेंद्र पितलिया, प्रसन्न धोका व ओम प्रकाश चावत का कैंप में सहयोग प्राप्त हुआ। अध्यक्ष विनय बैद ने सभी के प्रति आभार व्यक्त किया।

रक्तदान के क्षेत्र में अनुकरणीय कार्य हेतु सम्मान

विजयनगर।

तेयुप, विजयनगर अभातेयुप निर्देशित त्रिआयामी लक्ष्यों—सेवा, संस्कार, संगठन की ओर सतत गतिमान है। तेयुप, विजयनगर द्वारा एमबीडीडी के अंतर्गत किए जा रहे रक्तदान शिविरों एवं रक्तदान के क्षेत्र में तेयुप अध्यक्ष की सक्रिय सहभागिता एवं सेवा भावना को देखते हुए विवेक चेतना चैरिटेबल ट्रस्ट बैंलगोर द्वारा प्रमिला बाई विद्यालय में आयोजित कार्यक्रम में तेयुप, विजयनगर के सेवा एवं रक्तदान में अनुकरणीय कार्य की अनुमोदना करते हुए स्थानीय विधायक एम० कृष्णप्पा एवं समाज सेवी महेंद्र मुणोत द्वारा परिषद अध्यक्ष अमित दक का सम्मान कर प्रशस्ति-पत्र भेंट किया गया।

८३ यूनिट रक्त संग्रहण

जयपुर।

तेरापंथ युवक परिषद, जयपुर द्वारा आरआरपीएस एंड एसोसिएट में स्वैच्छिक रक्तदान शिविर का आयोजन किया गया। परिषद के अध्यक्ष राजेश छाजेड़ के नेतृत्व में तेयुप कार्यकर्ताओं व संयोजकों के प्रयास से शिविर में ८३ यूनिट रक्त का संग्रहण हुआ। शिविर में तेयुप, जयपुर के सदस्य अंकित जैन, संजय जैन, मयंक जैन, राजेश जैन, रवि जैन, सीए पंकज जैन के साथ अन्य पारिवारिक सदस्यों ने भी रक्तदान किया।

शिविर में स्थानीय विधायक अशोक लाहोरी ने रक्तदाताओं का उत्साहवर्धन करते हुए कहा कि तेयुप की ओर से चलाए जा रहे रक्तदान महाअभियान मानवता की सेवा के लिए बहुत उपयोगी है।

परिषद के अध्यक्ष राजेश छाजेड़ ने बताया कि शिविर में मेगा ब्लड डोनेशन ड्राइव के राष्ट्रीय संयोजक हितेश भंडिया, तेयुप, जयपुर के प्रथम अध्यक्ष महावीरचंद भंडारी, कोषाध्यक्ष करण नाहटा, कार्यसमिति सदस्य मनीष चोरड़िया, राजकुमार जैन एवं पूर्व सदस्य नवीन भंडारी, गणपत भंडारी, संदीप भंडारी, सीए पंकज जैन सहित अन्य महानुभावों ने रक्तदाताओं का उत्साहवर्धन किया।

शिविर की संयोजना में संयोजक दीपक भंसाली, सह-संयोजक प्रवीण भूतोड़िया व वरुण बरड़िया, कैंप संयोजक सीए पंकज जैन सहित अन्य तेयुप सदस्यों के सहयोग से रक्त का संग्रहण जीवनदाता ब्लड बैंक के द्वारा किया गया।

श्रमण संस्कृति के अनमोल रत्न थे - आचार्य कालूगणी

डीडवाना।

श्रमण संस्कृति के अनमोल रत्न थे - आचार्य कालूगणी। कालूगणी श्रमशील, अप्रमत्त और समत्वशील साधक थे। उन्होंने तेरापंथ धर्मसंघ को गुरुदेव तुलसी और आचार्य महाप्रज्ञ के रूप में दो ऐसे नर-रत्न दिए जिन्होंने तेरापंथ को अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर एक नई पहचान दी। आचार्य तुलसी ने आज के दिन पारमार्थिक शिक्षण संस्था एवं अणुव्रत आंदोलन का सूत्रपात कर महनीय कार्य किया। नैतिकता व चारित्रिक उत्थान के लिए अणुव्रत आचार संहिता मानव जाति के हित में सर्वश्रेष्ठ अवदान कहा जा सकता है। ये विचार जैन भवन में तेरापंथ के अष्टमाचार्य कालूगणी के जन्म दिवस पर मुनि चैतन्य कुमार जी 'अमन' ने धर्मसभा को संबोधित करते हुए व्यक्त किए।

मुनि चैतन्य कुमार जी ने कहा कि आचार्यश्री कालूगणी एक महान गुरु थे। गुरु वह होता है जो अज्ञान के अंधकार को दूर कर ज्ञान का प्रकाश प्रदान करते हैं। गुरु की महत्ता न केवल जैन धर्म अपितु सभी समाज में रही है। आज हम कालूगणी के जन्मदिन पर अपनी श्रद्धा समर्पित करते हुए अपनी संयम साधना के प्रति अप्रमत्त रहने की कामना करते हैं।

इस अवसर पर मुनि सुबोध कुमार जी ने भक्तामर का पाठ करवाया। तेरापंथी सभा से सुरेश चोपड़ा, देवचंद घोड़ावत, सम्राट जैन आदि उपस्थित थे।

कामना का विशुद्धिकरण हो तो कामना लाभदायी...

(पृष्ठ १२ का शेष)

लगभग चार बजे के आसपास आचार्यश्री ने स्कूल परिसर से टमकोर गांव की प्रस्थान किया। बुलंद जयघोष से गुंजायमान वातावरण के बीच आचार्यश्री टमकोर गांव स्थित तेरापंथ धर्मसंघ के दसमाधिशास्ता आचार्यश्री महाप्रज्ञजी की जन्मस्थली में पधारे। वहां आचार्यश्री ने कुछ समय ध्यान करने के उपरान्त उपस्थित जनसमूह को मंगल संबोधन भी प्रदान किया। तदपुरान्त आचार्यश्री कुल लगभग दो किलोमीटर का विहार कर रात्रिकालीन प्रवास हेतु कोठारी परिवार के निवास स्थान में पधारे।

आचार्यश्री के स्वागत में टमकोर से संबंधित मुनि नम्रकुमार जी तथा समणी पुण्यप्रज्ञा जी ने गीत का संगान किया। मुनि देवेंद्रकुमार जी व समणी निर्मलप्रज्ञा जी ने अपनी अभिव्यक्ति दी। आचार्य महाश्रमण प्रवास व्यवस्था समिति, टमकोर के अध्यक्ष अजीत चोरड़िया, आचार्य महाप्रज्ञ इंटरनेशनल स्कूल के चेयरमैन रणजीत सिंह कोठारी व जैन विश्व भारती के अध्यक्ष मनोज लुणिया ने अपनी भावाभिव्यक्ति दी। कार्यक्रम का संचालन समणी प्रतिज्ञाप्रज्ञा जी ने किया।

व्यक्तित्व विकास कार्यशाला का आयोजन

सफलता का राजपथ है कष्ट, सहिष्णुता और अनुशासन

बारडोली।

मुनि सुव्रत कुमार जी एवं मुनि आलोक कुमार जी के सान्निध्य में अभातेयुप के तत्त्वावधान में तेयुप द्वारा 'युवा पथ - सफलता का राजपथ' विषय पर दक्षिण गुजरात स्तरीय व्यक्तित्व विकास कार्यशाला का आयोजन तेरापंथ भवन, बारडोली में किया गया। जिसमें अहमदाबाद से समागत अंतर्राष्ट्रीय युवा मोटिवेटर साजन शाह एवं युवा गौरव राजेश सुराणा ने भी मार्गदर्शन दिया। कार्यशाला में बारडोली के अतिरिक्त सूरत, उधना, पर्वत पाटिया, नवसारी, बिलिमोरा, वलसाड, डुंगरी, किम, कामरेज आदि अनेक परिषदों के कार्यकर्ता उपस्थित रहे।

इस अवसर पर मुनि सुव्रत कुमार जी ने कहा कि हर व्यक्ति को अपना लक्ष्य निर्धारण कर लेना चाहिए। क्योंकि लक्ष्य के निर्धारण के बिना गति कैसे होगी? लक्ष्य प्राप्त करने के मार्ग में अनेक अवरोध आते हैं अनेक कष्ट आते हैं, लेकिन जो व्यक्ति मुसीबतों में भी धैर्य रख सकता है, दृढ़-संकल्प के साथ आगे बढ़ता है, आत्मानुशासित रह सकता है। मुनिश्री ने कहा कि व्यक्ति अपने रंग रूप से नहीं लेकिन अपने आचार-विचार और व्यवहार से महान बनता है।

मुनि आलोक कुमार जी ने कहा कि सफलता के राजपथ को प्राप्त करने के लिए पाँच D की जरूरत रहती है। D - डिजायर, ड्रीम, डेरिंग, डेडीकेशन, डिसिप्लिन। इन पाँच प्रकार के गुणों को धारण करने वाला युवक सफलता के शिखर पर अवश्य पहुँच जाता है।

मुनि हिमकुमार जी ने कहा कि उत्साह, उमंग, साहस, संगठन और काम करने की तीव्र इच्छा शक्ति होती है तो असंभव को भी संभव बनाया जा सकता है। मुनि लक्ष्य कुमार जी ने वर्षीतप एवं अन्य तप साधना द्वारा आंतरिक शक्ति के जागरण की प्रेरणा दी।

अंतर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त मोटिवेटर साजन शाह ने कहा कि युवक उसे कहते हैं जो समस्याओं का डटकर मुकाबला करता है। समस्याओं को हावी नहीं होने देता है, बल्कि उन्हें डराता है। उन्होंने कहा कि आपके घर में जितने इंच का टीवी होगा उससे तीन गुना साइज की आपकी लाइब्रेरी होनी चाहिए। जिससे सद्-साहित्य का पठन करके युवक अपने व्यक्तित्व का निर्माण कर सके।

अभातेयुप के परामर्शक युवा गौरव राजेश सुराणा ने कहा कि युवा शक्ति कभी चुनौतियों से घबराए नहीं, बल्कि चुनौतियों को सामने चलकर आमंत्रित करें। युवाओं में कुछ नया करने का जज्बा होना चाहिए। इतिहास का निर्माण ऐसे लोगों ने किया है जो दृढ़ संकल्प के साथ आगे बढ़े हैं।

अभातेयुप राष्ट्रीय उपाध्यक्ष एवं समारोह के अध्यक्ष जयेश मेहता ने तेयुप, बारडोली के सदस्यों की एकता, अनुशासन और संघनिष्ठा की सराहना की। तेयुप के अध्यक्ष साहिल बाफना ने स्वागत वक्तव्य दिया।

मुंबई से समागत अभातेयुप, राष्ट्रीय सहमंत्री भूपेश कोठारी व्यक्तित्व विकास कार्यशाला के राष्ट्रीय सहप्रभारी अमित गन्ना, बारडोली परिषद प्रभारी सुनील चंडालिया, श्रेष्ठ कार्यकर्ता अर्जुन मेड़तवाल आदि ने अभिव्यक्ति दी।

तेमम ने मंगलाचरण किया। कार्यक्रम का संचालन परिषद मंत्री रोनक सरणोत ने किया।

भिक्षु चरमोत्सव

कांकरोली।

आचार्यश्री भिक्षु के निर्वाण दिवस सुदी तेरस चरमोत्सव के अवसर पर हस्तीमल डागा की दुकान बजरंग चौराहा पर तेयुप के सदस्यगण द्वारा भिक्षु भजन मंडली, कांकरोली के तत्त्वावधान में भिक्षु भजन द्वारा क्रांतिकारी आचार्य भिक्षु को स्मरण करने एकत्रित हुए। सभी ने क्रांतिकारी वीर भिक्षु की जय के साथ विभिन्न प्रकार के भजनों से स्वामी जी को रिझाने का प्रयाय किया।

इस अवसर पर स्वयं हस्तीमल डागा, रामपाल सिंघवी भीकम कोठारी, तेयुप अध्यक्ष धनेंद्र मेहता, विकास बाबेल, पूर्व मंत्री विनोद बोहरा, दीपक चोरड़िया सहित अनेक सदस्यगण उपस्थित थे।

शक्ति होते हुए भी क्षमा रखना जीवन का आभूषण होता है : आचार्यश्री महाश्रमण

दुलानिया, २ मार्च, २०२२

दिल्ली की ओर द्रुत गति से गतिमान परमपूज्य आचार्यश्री महाश्रमण जी ने आज कुल २७ किलोमीटर विहार किया। प्रातःकालीन १७ किलोमीटर का विहार कर दुलानिया के राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय में मुख्य प्रवचन में मंगल प्रेरणा प्रदान करते हुए फरमाया कि आर्षवाणी का यह एक श्लोक है, जिसमें क्षमा का सागर समाहित है। क्षमा की बात बताई गई है कि मैं सब जीवों को खमाता हूँ और सब जीव मुझे क्षमा करें। सर्व प्राणियों के प्रति मेरी मैत्री है, किसी के साथ मेरा वैर नहीं है। कितना भावपूर्ण यह श्लोक है। दिन-रात में एक ऐसा श्लोक उच्चरित हो जाए जो क्षमा की दृष्टि से अच्छा रह सकता है, भाव शुद्ध हो जाए।

क्षमा का अर्थ है—सहिष्णुता। आदमी की यह कमजोरी होती है, कुछ प्रतिकूल स्थिति सामने आती है और वह कभी-कभी असहिष्णु बन जाता है। आवेश या आर्तध्यान करने लग जाता है। पर उस समय आदमी क्षमा रखे। जिस आदमी के हाथ में क्षमा रूपी खड्ग है, दुर्जन उसका क्या बिगाड़ेगा। घास-फूस है, वहाँ चिनगारी की लपटें उठ सकती हैं। परंतु केवल मैदान है, वहाँ आग लगे तो अग्नि कुछ समय में शांत हो जाएगी।

कोई आदमी कुछ कह रहा है, गाली दे रहा है, तो व्यक्ति सोचे कि इसकी बात में सच्चाई है या नहीं। अगर झूठी बात तो गुस्सा क्यों करूँ और सच्चाई है तो स्वयं की गलती का परिष्कार करूँ। बात सही हो या झूठी गुस्सा नहीं करना चाहिए। शांति-क्षमा रखना बड़ी चीज है। शक्ति होते हुए भी क्षमा रखना जीवन का आभूषण होता है। गुस्सा करना जीवन का दूषण होता है। परिस्थिति आती है, तब आदमी शांति रख ले, वह विशेष बात होती है।

पत्थर का जवाब ईंट से दो ये एक नीति हो सकती है, दूसरी नीति है, ईंट का जवाब फूलों से दें। साधु का स्वागत सचित-अचित फूल से नहीं वंदना-नमस्कार से किया जा सकता है। क्षमा धर्म भी है, अध्यात्म का मर्म भी है। क्षमा कर्म-प्रवृत्ति भी है। और शर्म भी है। सुख-शांति होती है। ऐसा क्षमा धर्म हमारे जीवन में रहे।

पूज्यप्रवर आज पिलानी होकर पधारे। पूज्य गुरुदेव तुलसी और बिडला के जीवन प्रसंग को समझाया। प्रेक्षाध्यान समता-प्रियता-अप्रियता का भाव वाला है। विद्यालयों में संस्कार-युक्त शिक्षा हो। कोरा ज्ञान आधा है। आचरण के साथ ज्ञान पूरा हो जाता है। विद्यार्थी में विद्या, विनय और विवेक भी आए। विद्या, विनय से शोभित होती है। इन तीनों गुणों से विद्यार्थी वीआईपी बन जाता है। हमारे में क्षमा के भाव रहें, यह काम्य है।

पूज्यप्रवर ने अहिंसा यात्रा के तीन उद्देश्यों को समझाकर स्थानीय लोगों एवं अध्यापकों-विद्यार्थियों को स्वीकार करवाए। पूज्यप्रवर के स्वागत में स्कूल के प्राचार्य राजेंद्र बांगड़वाल, माता सेवा समिति से सत्यनारायण मेव ने अपनी भावना अभिव्यक्त की। कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेश कुमार जी ने किया।

इच्छाओं पर हमारा संयम रहना चाहिए : आचार्यश्री महाश्रमण

हड़ौदाकलां, ३ मार्च, २०२२

परम पावन आचार्यश्री महाश्रमण जी प्रलंब विहार करते हुए दिल्ली की ओर अग्रसर है। आज पूज्यप्रवर का हरियाणा प्रदेश में पदार्पण हुआ। प्रातःकाल में १७ किलोमीटर और सायं में १५ किलोमीटर का विहार हुआ। मंगल प्रेरणा प्रदान करते हुए महामनीषी ने फरमाया कि मनुष्य में सामान्यतया इच्छा भी होती है। इच्छा अच्छी भी हो सकती है, तो इच्छा अवांछनीय भी हो सकती है। अवांछनीय इच्छा अध्यात्म से अनुकूल नहीं है। उससे विपरीत है।

मैं ज्ञान, धर्म, वीतरागता की साधना करूँ। संयमी जीवन जीऊँ ये सद्इच्छाएँ हैं। भौतिकता की इच्छा और आध्यात्मिकता की इच्छा, दो प्रकार की इच्छा हो सकती है। पदार्थों आदि को पाने वाली भौतिक इच्छाएँ हैं। आत्मकल्याण की जो भावना है, वह आध्यात्मिक इच्छा हो जाती है। ये चाँदी-सोने के पर्वत मिल जाएँ तो भी इच्छा यही रहती है कि और चाहिए-और चाहिए।

शास्त्रकार ने कहा है—इच्छा आकाश के समान अनंत होती है। दुनिया में सबसे बड़ी चीज आकाश होता है, जो अनंत है। आदमी को भौतिक इच्छाओं का परिसीमन करना चाहिए। इच्छाओं और भोग, उपभोग, परिभोग की सीमा करनी चाहिए। इच्छा दुःख का कारण होती है। आसक्ति, इच्छा, लालसा, लोभ, मूर्च्छा, कामना दुःख का एक बड़ा कारण है। सारी कामना पूरी नहीं होती है, तो दुःख होता है। परम सुख का एक साधन है—संतोष।

मूढ़, मोह में परायण आदमी असंतोष में रहता है। पंडित-ज्ञानी आदमी संतोष को धारण करता है। असंतोष का अंत नहीं। अभय भी विशेष सुख है। आसक्ति होती है, तो भय भी पैदा हो सकता है, यह एक प्रसंग से समझाया कि परिग्रह ऐसी चीज है कि उसका अर्जन करो तो भी श्रम करो, और उसकी सुरक्षा का भी ध्यान रखना पड़ता है। अर्जन में साधन शुद्धि हो। आदमी को परिग्रह की सुरक्षा के लिए भी कभी झूठ बोलना पड़ सकता है, यह एक प्रसंग से समझाया। इच्छाएँ असीम न हों। जहाँ सब अति महत्त्वाकांक्षी हो जाए वह राष्ट्र दुःखी हो सकता है। योग्यता नहीं है तो पद भार बन सकता है, योग्यता है तो पद उपहार बन सकता है। लोभ पापों का जनक है। अच्छी इच्छाएँ करें। गलत इच्छाएँ न करें। इच्छाओं पर हमारा संयम रहना चाहिए।

आज विद्यालय में आए हैं। विद्यालय में ज्ञान के साथ सदाचार बढ़ता रहे। विद्यालय से जाखड़ ने पूज्यप्रवर का स्वागत किया।

लोभ कम होने से ईमानदारी का संस्कार पुष्ट होता है : आचार्यश्री महाश्रमण

मलसीसर (झूंझनू),
२८ फरवरी, २०२२

महान् योगी आचार्यश्री महाश्रमण जी १० किलोमीटर विहार कर आज राणी सती स्थल के नाम से प्रसिद्ध शहर में पधारे। मंगल प्रेरणा प्रदान करते हुए शांतिदूत ने फरमाया कि हमारे भीतर अनेक वृत्तियाँ हैं। दुर्वृत्तियाँ भी आदमी में होती हैं और सद्वृत्तियाँ भी होती हैं। दुर्वृत्तियों में गुस्सा, अहंकार, घृणा, माया, लोभ आदि-आदि हैं। सद्वृत्तियों में क्षमा, विनम्रता, सहनशीलता, संतोष, प्रेम आदि-आदि हैं।

दुर्वृत्तियों में सबसे ज्यादा मौलिक-जड़ की दुर्वृत्ति लोभ होती है। एक लोभ की दुर्वृत्ति अनेक दुर्वृत्तियों को मानो आश्रय देने वाली हो सकती है। लोभ सामान्य आदमी में रहता है। किसी में लोभ प्रबल रहता है, तो किसी में निर्बल रहता है। ज्यादा लोभ न करें। लोभ से आदमी कई गलत काम कर लेता है। बच्चों में संस्कार आएँ कि ज्यादा लोभ नहीं करना चाहिए। चोरी नहीं करना, झूठ नहीं बोलना, यह एक प्रसंग से समझाया कि श्रम करके ही कुछ कमाना चाहिए। निकम्मा नहीं बनना चाहिए। बच्चे मेरे सामने बैठें वो भी सोचें, लोभ न करें।

लोभ कम होने से ईमानदारी का संस्कार पुष्ट हो सकता है। यह भी एक प्रसंग से समझाया कि हमारे भारत में कितने संत हैं, और अतीत में हुए हैं। भारत के पास ग्रंथ भी है, अनेक पंथ भी हैं, इनसे लाभ उठाएँ। संस्कारयुक्त शिक्षा हो। जीवन-विज्ञान से जीवन जीने की कला सीखी जा सकती है।

लोभ की वृत्ति मौलिक वृत्ति है। इसके कारण व्यक्ति अनेक अपराधों में, पापों में जा सकता है। पाप का बाप लोभ होता है। आदमी लोभ की वृत्ति कम कर संतोष धारण करे। संतोष कहीं करना चाहिए, कहीं नहीं भी करना चाहिए। भोजन, धन व कई बातों में संतोष करना चाहिए, पर तीन बातों में संतोष नहीं करना चाहिए। अध्ययन, जप और दान में संतोष नहीं करना चाहिए। पदार्थों-भोगों में संतोष करें।

ब्राह्मण असंतोष में रहता है, वो अच्छी बात नहीं। राजा संतोष कर ले वह जनता के लिए अच्छी बात नहीं। विकास का आकाश बहुत बड़ा है। उसमें उड़ान भरें, आगे बढ़ने का प्रयास करें, तो हम जीवन में लोभ दुर्वृत्ति को नियंत्रित रखने का प्रयास करें, यह काम्य है।

आज मलसीसर आना हुआ है। दुगड़-सुराणा परिवार के श्रावक हैं। आदर्श विद्या मंदिर के प्रांगण में प्रवास हो रहा है। अहिंसा यात्रा के तीनों संकल्पों को समझाकर विद्यार्थियों एवं गाँव के लोगों को स्वीकार करवाए। आदर्श विद्यालय के भवानी सिंह ने पूज्यप्रवर का स्वागत किया। सुराणा परिवार द्वारा स्वागत गीत प्रस्तुत किया।

कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेश कुमार जी ने किया।

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
14 - 20 मार्च, 2022

✦ *धर्म और संप्रदाय में धर्म का महत्त्व अधिक है। सत्य धर्म है।*
—आचार्यश्री महाश्रमण

अपने गुरु की जन्मभूमि टमकोर पधारे युगप्रधान आचार्य महाश्रमण

कामना का विशुद्धिकरण हो तो कामना लाभदायी हो सकती है : आचार्यश्री महाश्रमण

टमकोर, २७ फरवरी, २०२२

साधना के विशिष्ट योगीराज, महान दार्शनिक, तेरापंथ के दशम् अधिशास्ता, प्रेक्षाध्यान के प्रदाता आचार्यश्री महाप्रज्ञ जी की जन्मभूमि टमकोर में उन्हीं के पट्टधर महातपस्वी आचार्यश्री महाश्रमण जी का पदार्पण हुआ। पूज्यप्रवर का प्रवास महाप्रज्ञ इंटरनेशनल स्कूल में हुआ।

आचार्यश्री महाप्रज्ञ जी के परंपर पट्टधर आचार्यश्री महाश्रमण जी ने अपने गुरु की अवतरण भूमि पर मंगल प्रेरणा पाथेय प्रदान करते हुए फरमाया कि सामान्य आदमी के भीतर कामना रहती है। कामना एक ऐसा रूप भी धारण कर लेती है या कर सकती है कि वह शल्य बन जाए, आशिविष के समान हो जाए। कामना का उदात्तिकरण-विशुद्धिकरण हो जाए तो कामना लाभदायी भी हो सकती है।

आदमी के भीतर भौतिकार्षण या भोगाकर्षण होता है, कभी-कभी आदमी दूसरों के अनिष्ट की कामना भी कर सकता है, यह निकृष्ट कामना होती है। जब आदमी में कामना का प्रकृष्ट रूप हो जाए, मेरा भी कल्याण हो, दूसरों का भी कल्याण हो। सब प्राणी खुश रहें, सब निरामय रहे, सबका कल्याण हो, दुनिया में कोई दुःखी न रहे, यह एक उत्कर्ष कामना है।

आदमी जन्म लेकर बचपन में रहता है, युवा भी होता है, कभी वार्धक्य को प्राप्त हो जाता है और एक दिन अलविदा कहकर चला जाता है। यह स्थिति जीवन की होती है। इनमें एक किनारा है—जन्म और दूसरा किनारा है—मृत्यु। दोनों किनारों के बीच में जो जीवन की सरिता प्रवाहित होती है, उसका महत्त्व हो सकता है। जब यह जीवन की सरिता पवित्रता के साथ प्रवाहित होती है, सम्यक् पुरुषार्थ इसके साथ रहता है, तब इसका महत्त्व होता है।

आज हम उस गाँव में आए हैं जिस गाँव को पवित्र सरिता वाले जीवन को जीने वाले व्यक्ति की जन्म-भूमि होने का गौरव प्राप्त है। आचार्यश्री महाप्रज्ञ जी इसी टमकोर की भूमि में जन्मे थे। ऐसे महापुरुष के नाम से ये टमकोर गाँव भी महिमा मंडित-गरिमा भूषित बन गया है। हमारे संघ का भी सौभाग्य है कि ऐसे व्यक्ति धर्मसंघ को प्राप्त हुए हैं, जो धर्मसंघ का नेतृत्व करने वाले बने थे।

मैं वैसे जन्म लेने को ज्यादा महत्त्व नहीं देता हूँ। दीक्षा को ज्यादा महत्त्व देता हूँ। जन्म तो सभी लेते हैं, दीक्षा कोई-कोई लेता है। महाप्रज्ञ जी की दीक्षा सरदारशहर में हुई थी। उनका ननिहाल पक्ष भी सरदारशहर था। अंतिम श्वास की भूमि भी सरदारशहर ही है। जीवन में व्यक्ति क्या करता है, उसका महत्त्व है। दीक्षा के बाद उनका व्यक्तित्व, कृतित्व सामने आया। वे एक दार्शनिक संत के रूप में उभरकर सामने आए। आचार्य तुलसी ने भी उनको बहुत आगे बढ़ाया।

आचार्य तुलसी ने उनको युवाचार्य तो बनाया ही, अपनी विद्यमानता में उन्हें आचार्य पद पर भी स्थापित कर दिया था। इस माने में आचार्य महाप्रज्ञजी विलक्षण आचार्य हैं। आगम संपादन उनका एक महान् अवदान है। प्रेक्षाध्यान पद्धति उन्होंने आगे बढ़ाई थी। जैन विश्व भारती द्वारा टमकोर जैसे गाँव में ऐसा विद्यालय आज हमें देखने को मिला है। यहाँ के विद्यार्थी को सामान्य पाठ्यक्रम के साथ जीवन-विज्ञान, जैनिज्म, तेरापंथिज्म यथा समय पढ़ाया जाता रहे। जीवन अच्छा बने, उसके उपक्रम भी यहाँ चलते रहें।

आचार्यश्री तुलसी ने अनेक नए-नए अवदान दिए, उन्हें संपृष्ट करने में आचार्य महाप्रज्ञजी का भी योगदान रहा है। कुछ संदर्भों में आचार्य तुलसी व आचार्यश्री महाप्रज्ञ जी को अभिन्न या नैकट्य माना जा सकता है। तुलसी में महाप्रज्ञ को देखो, महाप्रज्ञ में तुलसी को देखो। साध्वीप्रमुखाश्री जी का ननिहाल पक्ष भी यहीं है। मेरा भी पड़ननिहाल टमकोर होता है। हम साध्वीप्रमुखाश्री जी के स्वास्थ्य के प्रति भी मंगलकामना करते हैं। 'आरोग्ग-बोहि लाभं, समाहिवर मुत्तमं दिंतु।' का जप करवाया। अनेक चारित्रात्माएँ भी टमकोर से जुड़े हैं।

आज पता चला है कि साध्वीवर्या भी समण श्रेणी के साथ यहाँ पढ़ाती थीं। यह विद्यालय विद्यार्थियों को ज्ञान और संस्कार प्रदान कराता रहे, यह मंगलकामना है।

पूज्यप्रवर की अभिवंदना में टमकोर के मुनि देवेंद्र कुमार जी, मुनि नम्र कुमार जी, समणी निर्मल प्रज्ञा जी ने अभिव्यक्ति दी।

कार्यक्रम में विशेष रूप से उपस्थित झुंझुनू के सांसद नरेन्द्र कुमार खिंचड़ ने कहा कि मैं समस्त जिलावासियों की ओर से महातपस्वी, युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमणजी का हार्दिक-स्वागत एवं अभिनंदन करता हूं। आचार्यश्री महाप्रज्ञजी की जन्मभूमि की पावन धरा आपके पदार्पण से मानों स्वर्ग बन गई है। मुझे आपश्री के दर्शन कर ऐसा लगा कि मैंने साक्षात् भगवान के दर्शन कर लिए। मेरा आपसे अनुरोध है कि आपश्री के चरण बार-बार हमारी धरती पड़ते रहें और आपश्री का निरंतर आशीर्वाद हम सभी को प्राप्त होता रहे।

इसके उपरान्त मुमुक्षु नुपूर, प्रतापसिंह चोरड़िया, भीखमचंद नखत, सुशील चोरड़िया, केशरीचंद चोरड़िया तथा स्कूल के प्रिंसिपल लोकेश तिवारी ने आचार्यश्री के स्वागत में अपनी भावाभिव्यक्ति दी। स्कूल की छात्रा मंजू ने अंग्रेजी भाषा में अपनी अभिव्यक्ति दी। तेरापंथ महिला मण्डल तथा तेरापंथ युवक परिषद-टमकोर के सदस्यों ने स्वागत गीत का संगान किया। आचार्य महाप्रज्ञ इण्टरनेशनल स्कूल के विद्यार्थियों ने दो कार्यक्रमों की भावपूर्ण प्रस्तुति दी। स्थानीय तेरापंथ महिला मण्डल की सदस्याओं द्वारा संकल्पों का उपहार अर्पित कर 'नानेरो रे दही रोटिया' पुस्तक श्रीचरणों में लोकार्पित की। डॉ जुल्फीकार ने भी अपनी पुस्तक भी पूज्यचरणों में लोकार्पित की। आचार्यश्री ने दोनों पुस्तकों के संदर्भ में मंगलकामनाएं प्रदान कीं।

(शेष पृष्ठ १० पर)

शासनश्री साध्वी कंचनकुमारी जी का देवलोकगमन

हांसी।

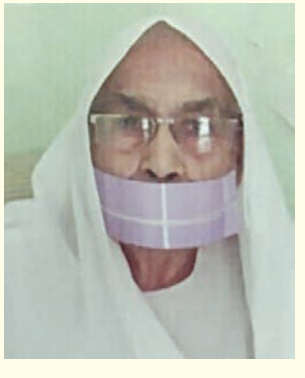

शासनश्री साध्वी कंचनकुमारी जी का २ मार्च को हांसी में संलेखना की स्थिति में देवलोकगमन हो गया। पौष शुक्ला ११ को लाडनूं के महालचंद खटेड़ की धर्मपत्नी गणेशी देवी की कुक्षी से जन्मी अपनी माता-पिता की इकलौती संतान थी। ५ वर्ष की लघुवय में ही वैराग्य के बीज प्रस्फुटित हो गए थे। ८ वर्ष की अवस्था में लाडनूं निवासी हीरालाल मोदी के साथ आपकी सगाई हुई जो लगभग अढ़ाई वर्ष तक रही। माँ ने वैराग्य के संस्कार पुष्ट किए। आचार्यश्री तुलसी ने कहा—'माँ नारी नहीं नाहरी है।'

आप तीक्ष्ण बुद्धि की धनी थीं—एक दिन में २५ बोल याद कर सुनाए। सेवाभावी भाईजी महाराज भी आपका कंठस्थ ज्ञान सुन लेते थे। आखिर त्याग की विजय हुई—पारिवारिक अनुज्ञा प्राप्त कर चैत्र शुक्ला ११, वि०सं० २००५ लाडनूं में आपने आचार्यश्री तुलसी से दीक्षा प्राप्त की। १० माह तक गुरु सन्निधि में रहने का अवसर मिला। साध्वीप्रमुखा लाडांजी की अत्यंत कृपा रही। ३५ वर्षों तक साध्वी सिरेकुमारी जी 'सरदारशहर' के साथ उनके तन का कपड़ा बनकर रहीं।

वि०सं० २०५० मर्यादा महोत्सव के बाद आचार्यश्री तुलसी ने अग्रणी बनाया। आपको लगभग ३० थोकड़े, चार आगम (दसवैकालिक, उत्तराध्ययन, आचारांग, वृहत्कल्प) कंठस्थ थे। बत्तीसी का ३ बार, चौथी बार आधे का स्वाध्याय किया। प्रवचन देने में कुशल थी, शैली सरस थी, बिना देखे देती। अनेक विशेष संकल्प—वर्ष में ५ आगम सूत्र वाचन, शिकायत नहीं करना, किसी को कहा बुरा लगने पर क्षमायाचना किए बिना मुँह में पानी न लेना और अगले दिन ५ विगय टालना आदि।

आप प्राकृत, संस्कृत, हिंदी, राजस्थानी, हरियाणवी भाषाओं की ज्ञाता थीं। अनेक पुस्तकें भी लिखीं। सबको अपना बनाने की कला में निपुण थीं।

पिछले डेढ़ वर्षों से जिह्वा से संबंधित मस्तिष्क की नस निष्क्रिय होने से बोल नहीं पाती थीं, खा नहीं पाती थीं। उचित उपचार के बाद भी स्थिति में परिवर्तन नहीं आया। धीरे-धीरे भूख-प्यास का परिषह बढ़ता गया। जिसे अत्यंत समता से सहन किया। पिछले १०-१२ दिनों से संलेखना तप चल रहा था। चार दिन से किसी भी प्रकार की औषध नहीं ली। १ मार्च को तबीयत गड़बड़ा गई। २ मार्च को लगभग ४ बजे साध्वीश्री जी का देवलोकगमन हो गया।

अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद् के लिए मुद्रक, प्रकाशक एवं संपादक - **पंकज कुमार डागा** द्वारा मै. जी.के. फाइन आर्ट प्रेस, सी-1, एफआईएफ, पटपड़गंज, औद्योगिक क्षेत्र, दिल्ली-110092 से मुद्रित तथा 210, दीनदयाल उपाध्याय मार्ग, नई दिल्ली - 110 002 से प्रकाशित। कार्यकारी संपादक : **दिनेश मरोठी**